चन्दामामा
अप्रैल १९६५

बच्चों के लिये
स्वास्थ्यवर्द्धक
टॉनिक
लाल-शर
(डाबर बालामृत)
बच्चों के सुन्दर स्वास्थ्य और
शारीरिक विकास के लिये मन-
पसन्द मीठी पुष्टई।
८२ वर्षों से जन-कल्याण
में संलग्न
डाबर
(डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि०,
कलकत्ता-२९

अप्रैल १९६५

★

विषय - सूची

संपादकीय	१	शीशे के पहाड़ पर राजकुमारी	३३
भारत का इतिहास	२	वाक्सिद्धि	४०
नेहरू की कथा	५	तूफान	४५
दुर्गेशनन्दिनी (धारावाहिक)	९	युद्धकाण्ड (रामायण)	४९
व्यर्थ प्रयत्न	१७	रुक्मांगद	५७
विपरीत पुराण	२५	संसार के आश्चर्य	६१
अप्सरा की सन्तति	२९	फ़ोटो परिचयोक्ति	६४

★

एक प्रति ६० पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ७–२०

जन्मदिन के निमंत्रण पर...

शायद प्रमोद को हमारी भेंट पसन्द आये !

ज़रूर पसन्द आयेगी ! टॉफी हर किसी को अच्छी लगती है !

हम लोगों को भी एक एक अगर चखने देते !

ऐसा लालची मत बनो !

जन्मदिन शुभ हो प्रमोद !

और तुम्हारे लिये यह भेंट है—हम सबों की ओर से !

बहुत अच्छा भाइयो ! आओ— हम सब मिलकर क्रिकेट खेलें ! तब चाय के लिये अन्दर जायेंगे !

कितनी अच्छी पार्टी है !

मैंने तो बहुत खाया !

बहुत अंधेरा है बाहर ! अब हम लोग क्या करेंगे ?

चलो, पिंग-पोंग खेलें !

अच्छी बात है !

अरे—गेंद खिड़की के रास्ते बाहर चली गई !

खो गई ! अंधेरे में मिल भी नहीं सकती ! अब हम लोग क्या करेंगे ?

यहाँ है—मुझे मिल गई !

एक 'एवरेडी' टॉर्च बराबर साथ रखिये । पता नहीं कि कब उसकी ज़रूरत पड़े ?

JWTUC 3346

जॉन्सन्स* बेबी ऑइल

बच्चे की रोज़ाना मालिश के लिए

जॉन्सन्स बेबी ऑइल अच्छी तरह साफ़ किये हुए शुद्ध ह्वाइट ऑइल और शीतल लैनोलिन को मिलाकर बनाया जाता है। यह त्वचा को आराम पहुँचाता है और इससे खुजली, जलन वग़ैरह नहीं होती। बच्चे को नहलाने से पहले हमेशा जॉन्सन्स बेबी ऑइल से उसकी मालिश कीजिए। इससे माँस-पेशियों को मज़बूत बनाने और त्वचा को मुलायम और चिकना रखने में मदद मिलती है। सिर को खुश्की व पपड़ी निकलने से बचाने के लिए उसमें भी अच्छी तरह इसकी मालिश कीजिए। जॉन्सन्स बेबी ऑइल बच्चे की कोमल त्वचा को धूप और हवा के बुरे असर से भी बचाता है।

जॉन्सन्स* बेबी शैम्पू

आँखों में जलन बिल्कुल नहीं करता

जॉन्सन्स बेबी शैम्पू से बच्चे का सिर धोकर देखिए, वह रोएगा ही नहीं! इसकी ख़ास ख़ूबी यह है कि आम साबुनों और शैम्पू की तरह यह आँखों में जलन नहीं करता। जॉन्सन्स बेबी शैम्पू से बाल मुलायम बने रहते हैं, आसानी से सँवारे जा सकते हैं...और उनमें से भीनी भीनी खुशबू आती रहती है।
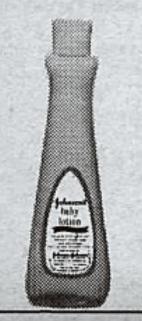
जॉन्सन्स* बेबी लोशन

कोमल त्वचा को खुजली, जलन से बचाता है

जॉन्सन्स बेबी लोशन आरामदेह और हल्का-सा एण्टिसेप्टिक है। इससे बच्चे की त्वचा खुजली और कपड़ों की रगड़ वग़ैरह से बची रहती है। बच्चे की त्वचा की शिकनों में इसे अच्छी तरह लगाइए क्योंकि अक्सर इन्हीं जगहों पर जलन वग़ैरह होती है। जॉन्सन्स बेबी लोशन से त्वचा स्वस्थ रहती है क्योंकि इससे त्वचा की रक्षा तो होती ही है, उसके रन्ध्र भी बन्द नहीं होते।

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड
३०, फ़ॉर्जेट स्ट्रीट, बम्बई-२६
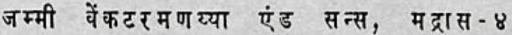
JWT-JJ-3193

LIFEBUOY
for health
अब
एक नई
शान के साथ!
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन
L. 47-77 HI

सीखने में देर क्या सबेर क्या!
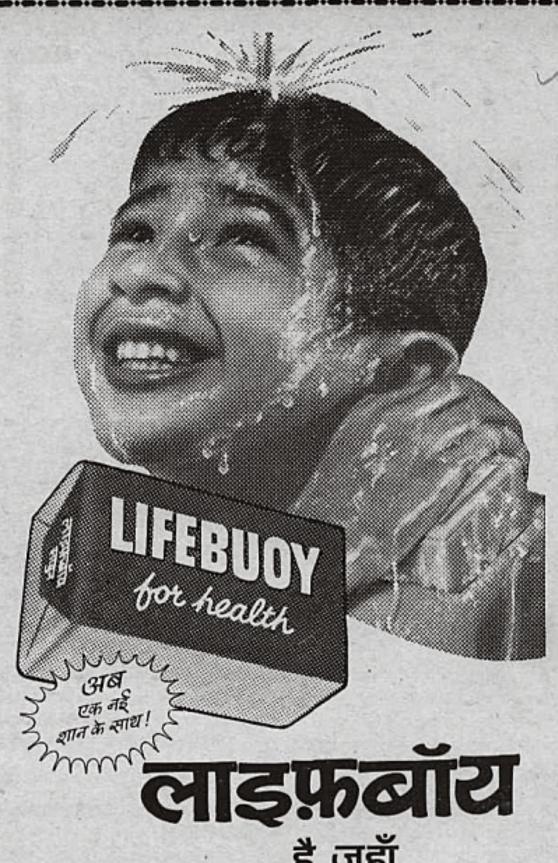
नन्हे बालक जल्द ही सीख जाते हैं कि पौधे पानी से ही जिन्दा रहते और बढ़ते हैं। यह साधारण सत्य एक बार सीखने के बाद भूलता नहीं।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूढ़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूढ़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें — उन्हे दांतो व मसूढ़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूढ़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूढ़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१.

Forhan's
TRADE MARK
REGISTERED
FOR THE GUMS

COUPON

C.1

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name ______________________

Address ______________________

____

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम पहिले भी तेनालि रामलिंग की कहानियाँ "चन्दामामा" में दे चुके हैं। इस अंक में भी एक दी है—"विपरीत पुराण"

तेनालि रामलिंग की कहानियाँ, उसके कारनामें दक्षिण में बहुत प्रसिद्ध हैं। वह प्रकाँड पंडित ही नहीं, विकट कवि भी था। वह महान सम्राट कृष्ण देवराय के दरबार में मुख्य कवियों में थे।

प्रायः तेनालि रामलिंग की तुलना उत्तर के बीरबल से की जाती है। हो सकता है कि जहाँ तक हास्य कथाओं का सम्बन्ध है, यह तुलना ठीक भी हो। तेनालि रामलिंग की कहानियाँ आज भी बड़े चाव से पढ़ी सुनी जाती हैं।

वर्ष : १६ अप्रैल १९६५ अंक : ८

भारत का इतिहास

हुमायूँ के बाद जब अकबर को बादशाह घोषित किया गया, तो वह बैराम खान के साथ पंजाब में था। परन्तु वह नाम मात्र के लिए ही बादशाह था। अकबर को अपने को बादशाह कहने का हक था, उतना ही हक शेरशाह के उत्तराधिकारियों को भी था।

१५५६ में सचमुच भारत में राजनैतिक परिस्थिति बड़ी उलझी हुई थी। शेर शाह के बाद, उसके वंशवाले आपसी झगड़ों में फँस गये। शेरशाह ने जो सुधार किये थे, उसका फल लोगों तक न पहुँच सका। देश में भयंकर अकाल पड़ गया।

देश के भिन्न भिन्न स्वतन्त्र राज्य, एक दूसरे से लड़ने झगड़ने लगे। अकबर की सौतेली माँ का लड़का, मिर्जा मुहम्मद हकीम काबुल पर इस तरह शासन कर रहा था, जैसे वह स्वतन्त्र हो। काश्मीर और हिमाचल के राज्य, स्थानीय मुस्लिम शासकों के नीचे स्वतन्त्र थे। शेर शा के मरने के बाद, सिन्ध, मुल्तान पर दिल्ली के बादशाह का अधिकार न था। उसी तरह मालवा, ओड़ीसा और गुजरात के स्थानीय शासन में किसी का अधिकार न था। विन्ध्य के नीचे विस्तृत विजयनगर साम्राज्य खानदेश, बिरार, बीदर, अहमद नगर, गोल्कोण्डा की सल्तनतें थीं। उनके शासकों को उत्तर भारत की राजनीति से कोई सम्बन्ध न था। पश्चिमी तट पर गोवा आदि पोर्चुगीज़ों का अधिक प्रभाव था। मृत्यु के समय पूर्व साम्राज्य का जो भाग हुमायूँ जीत पाया था, वह बहुत कम था—आगरा से मालवा तक। जोनपुर में आदिलशाह का अधिकार था। दिल्ली से

काबुल जानेवाले मार्ग का कुछ भाग शा सिकन्दर के हाथ में था। हिमालय से गुजरात सीमा तक का भाग इब्राहीम खान के आधीन था। शेर शा के राज्य का अधिक भाग सूर वंश के लोगों के हाथ था।

अकबर के गद्दी पर आने के बाद, आदिल शा सूर का मन्त्री और सेनापति हीमू ने मुगलों पर आक्रमण किया और वहाँ के गवर्नर तार्दी बेग को हराकर, आगरा और दिल्ली को वश में कर लिया। चूँकि वह दिल्ली की रक्षा न कर सका था, इसलिए बैराम खान ने तार्दी बेग को मौत की सजा दी।

फिर हीमू ने विक्रमजित (विक्रमदित्य) की उपाधि अपने नाम के साथ लगाई। १५०० हाथियोंवाले सेना के साथ, उसने प्रसिद्ध पानीपत की युद्धभूमि में अकबर और बैरामखान का मुकाबला किया। शुरु में तो हीमू ही जीतता लगा। परन्तु कोई बाण आकर, हीमू की आँख में लगा और वह बेहोश हो गया, तब उसके सैनिक डर गये और वे तितर बितर होकर भाग गये। इस हालत में वह मारा गया। कुछ का
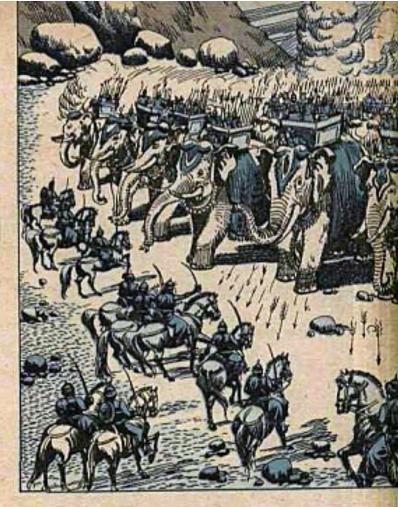
कहना है कि अकबर ने उसे स्वयं मारा था, और कुछ का कहना है कि अकबर के मना करने पर, बैरामखान ने उसे मारा था।

पानीपत के दूसरे युद्ध में यह साफ हो गया कि अफ़गान और मुगलों के युद्ध में मुगल ही अधिक बलशाली थे। दिल्ली और आगरा, फिर मुगलों के आधीन हो गये। १५५७ के मई में, सिकन्दर सूर मुगलों के सामने झुक गया। पूर्वी ईलाके में, उसको एक जागीर दी गई। पर जल्दी ही उसे अकबर ने भगा दिया। १५५८-५९ में, वह शरणार्थी के रूप में मर गया।

मोहम्मद आदिल, बंगाल के गर्वनर से लड़ता, मुँगेर के पास १५५६ में मर गया। इब्राहीम कई देश घूमा फिरा, आखिर वह ओड़ीसा आ गया। वहीं १५६७-६८ में उसकी हत्या कर दी गई। इसके बाद, भारत में अकबर की गद्दी को चेतवानी देनेवाला, सूर वंश का कोई न रहा।

इतनी सब विजयों के बाद भी, अकबर नाम मात्र ही बादशाह था। अधिकार बैरामखान के हाथ में ही थे। अकबर तो, स्वयं स्वतन्त्र शासक होना ही चाहता था, उसकी माँ हमीद बानु बेगम, उसको पालनेवाली मुहाँ और उसका लड़का, आदमखान ने भी अकबर को, बैरामखान को हटाने के लिए कहा। १५६० में अकबर ने घोषणा की कि वह शासन की बागड़ोर लेगा और बैरामखान को उसके पद से हटाया जाता है। बैरामखान ने कहा कि वह अकबर की आज्ञा का पालन करेगा और स्वयं मक्का चला जायेगा। उसको शीघ्र ही मक्का भेजने के लिए अकबर ने मीर मोहम्मद को नियुक्त किया। उसने कभी बैराम के नीचे काम किया था। वह उसका व्यक्तिगत शत्रु भी था। इसलिए बैरामखान यह न सह सका। उसने विद्रोह किया और जलन्धर के पास वह मारा गया। फिर भी, अकबर, जो पहिले उसने उसका उपकार किया था उसे न भूला था। उसने इसलिए उसके प्रति उदारता दिखाई। १५६१ जनवरी में, जब बैरामखान मक्का जा रहा था, तो एक लौहानी अफगान ने, उसकी हत्या कर दी। अकबर ने उसके लड़के अब्दुर रहीम को अपने पास रखा और उसे बड़ा किया।

नेहरू की कथा

[९]

पंजाब के हत्याकाण्ड के कारण जवाहरलाल नेहरू गान्धीजी के और निकट आ गये। मार्शल ला के हटते ही कान्ग्रेस ने उसके अन्तर्गत गिरफ्तार व्यक्तियों की सुनवायी में सहायता करने की व्यवस्था की।

सहायता का कार्यक्रम चलाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द और मदन मोहन मालवीय जी को नियुक्त किया गया। मुक्दमों में मदद करने की जिम्मेवारी पं. मोतीलाल नेहरू और "देशबन्धु" चित्तरंजन दास पर डाली गयी और यह सारा काम, स्वयं गान्धीजी शुरु से देख रहे थे।

जवाहरलाल को दास का सहायक मुकर्रिर किया गया। वे, दास से बड़े प्रभावित हुए। दोनों मिलकर, कई बार जलियाँवाला बाग गये। नाम तो इसका बाग है, पर सचमुच, यह कुछ नीची जगह है। यहाँ इकट्ठे हुए लोगों पर ही डैयर ने गोली बारी की थी। वहाँ जवाहरलाल नेहरू ने बहुत ही मार्मिक किस्से सुने। उन्होंने वह गली भी देखी, जहाँ अंग्रेज़ों ने एक अंग्रेज़ युवती पर हाथ रखने के बदले में, निर्दोष लोगों पर गोलीबारी की थी।
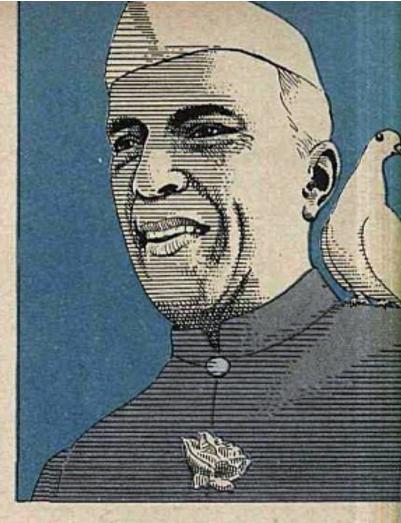
१९१९ में, जवाहरलाल नेहरू अमृतसर से जब दिल्ली जा रहे थे, तो उसी डिब्बे में इत्तिफाक से चढ़े, जिसमें डैयर आदि थे और उन्होंने स्वयं उनको जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड के बारे में डींग मारते सुना। उसको यह बहुत बुरा लगा।
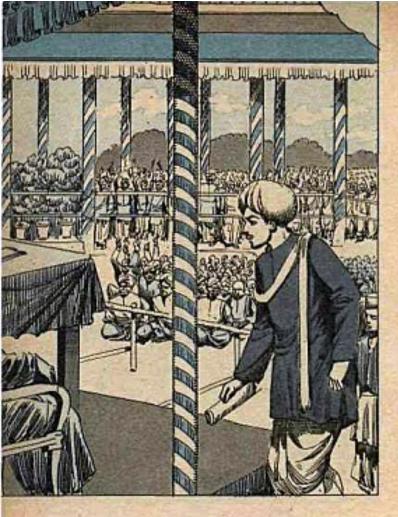
कान्ग्रेस जो इस सम्बन्ध में काम कर रहा था—उसमें गान्धीजी बड़ी दिलचस्पी दिखा रहे थे। जवाहरलाल उनसे कई बार मिले। जवाहरलाल ने देखा कि उनसे दृष्टिकोण और गान्धीजी के दृष्टिकोण में बहुत अन्तर था। जो सुझाव गान्धीजी ने दिये, वे उनको बड़े विचित्र से लगे। परन्तु गान्धीजी अपने दृष्टिकोण के बारे में, बड़े धैर्य और सावधानी से बात किया करते। आखिर उनकी बात ही चलती। यह भी उन्होंने देखा, अमल होने पर उनकी बात ठीक भी साबित होती।

गान्धीजी में अभी-अभी यद्यपि उनको पूरी आस्था नहीं थी तो भी, उनके प्रति जवाहरलाल नेहरू का आदर बढ़ता जाता था।

गान्धीजी से मिलकर, उनको समझने का मौका मोतीलालजी के लिए भी यह पहिला ही था। गान्धीजी का चिन्तन, यद्यपि पिता और पुत्र को, कभी टेढ़ा लगता पर उसका परिणाम प्रायः अच्छा ही निकलता।

जवाहर जान गये कि गान्धीजी असाधारण व्यक्ति थे, उनमें, उन्होंने एक अद्भुत विप्लव शक्ति देखी। गान्धीजी हमेशा जनता के सुख का ख्याल करते। उनके मनोभावों को समझते थे।

धीमे-धीमे राजनैतिक नेतृत्व गान्धीजी के हाथ में आ गया। १९१९ में मोतीलालजी की अध्यक्षता में, अमृतसर में कान्ग्रेस का अधिवेशन हुआ। उसमें तिलक आये थे, पर सभी के दृष्टि, गान्धीजी पर ही केन्द्रित थी। पहिली बार "गान्धीजी की जय" गूँजी। यह तिलक के लिए आखिरी अधिवेशन था। अगले साल अगस्त में वे गुज़र गये।

इस अधिवेशन में, मोतीलाल ने उदार वादियों को बुलाया तो, परन्तु कलकत्ता में उन्होंने अपनी अलग सभा बुलवायी। उनकी दृष्टि नये सुधारों पर पड़ी।

शायद उनके न आने पर, जवाहरलाल को इस अधिवेशन में, एक नई चेतना दिखाई दी। एक नई शक्ति उनको अमृतसर में दृष्टिगोचर हुई।

अलि भाई जेल से छूटते ही कोन्ग्रेस में शामिल हो गये। गान्धीजी ने खिलाफत आन्दोलन का समर्थन करके, मुसलमानों को कोन्ग्रेस की ओर आकर्षित किया।

गान्धी जी के साथ, जवाहरलाल नेहरू कई बार खिलाफत नेताओं की सभा में गये। गान्धी जी की विचार धारा, जिसे वे भले ही न समझ पाते हों उनके लिए आकर्षक थी।

गान्धीजी आज्ञा देते हुए भी, कितने ही प्रिय लगते थे। उनमें अध्यवसाय, दीक्षा, निष्ठा, स्पष्टता, सब थीं। उस समय वे अहिंसामय असहयोगवाले सत्याग्रह का प्रचार कर रहे थे। उन्होंने यह ही सलाह खिलाफन आन्दोलन के नेताओं को भी दी।

खिलाफत आन्दोलन में जितनी अभिरुचि गान्धी जी को थी, नेहरू को न थी। चूँकि खिलाफत का खास ताल्लुक मजहब से था और खलीफ़ा के हकों से था। परन्तु गान्धी जी की दृष्टि में वह मुस्लिम प्रजा का प्रिय आन्दोलन था। यही नहीं, इससे हिन्दु मुस्लिम एकता भी बढ़ती थी।

२८ मई १९२० में खिलाफत कमेटी की बम्बई में मीटिन्ग हुई और उसमें उन्होंने गान्धी जी के सत्याग्रह के प्रस्ताव का समर्थन किया। उसी साल के मार्च मास में जलियाँवाला बाग के बारे में

कान्ग्रेस की रिपोर्ट छपी और उसके कारण देश में कुहराम मच गया। यह निर्णय किया गया कि अमृतसर के हत्याकाण्ड की स्मृति में, एप्रिल ६ से १३ तक, "राष्ट्रीय वार" समझा जाय। गान्धीजी कभी कभी जानबूझकर, बड़ी बड़ी बातें आसानी से कहते थे—"लोगों को फाँसी को रोजमर्रे की चीज़ समझना चाहिए।" उन्होंने इस प्रकार अपनी जीवन को देश के लिए बलिदान कर देने की प्रेरणा दी।

मई ३०, वाराणसी में हुई कान्ग्रेस कमेटी में यह निश्चय किया गया कि सितम्बर में अलग कान्ग्रेस हो और उसमें गान्धीजी के सत्याग्रह के बारे में चर्चा हो। पर इस बीच गान्धीजी ने निश्चय किया कि सत्याग्रह १ अगस्त को ही शुरु किया जाये।

"उसी दिन बम्बई में तिलक की मृत्यु हो गयी। उन्होंने अन्तिम क्षणों में कहा—"स्वराज्य के बिना, भारत का भाग्य नहीं खिलेगा। हमारे जीवन के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है।" उन दिनों गान्धीजी और जवाहरलाल नेहरू जो, सिन्ध का दौरा कर रहे में, संयोग से, उस दिन सवेरे बम्बई पहुँचे।

तिलक की विराट शवयात्रा बोरवाप में निकली। चौपाती में चन्दन से उनके भौतिक शरीर का दहन संस्कार हुआ। गान्धीजी और जवाहरलाल नेहरू दोनों ही उस शवयात्रा में थे।

"मेरा एक बहुत बड़ा सहारा चला गया है।" गान्धीजी ने कहा। वे जानते थे कि उसके बाद, देश के नेतृत्व का भार, उनके कन्धों पर आ जायेगा।

[१०]
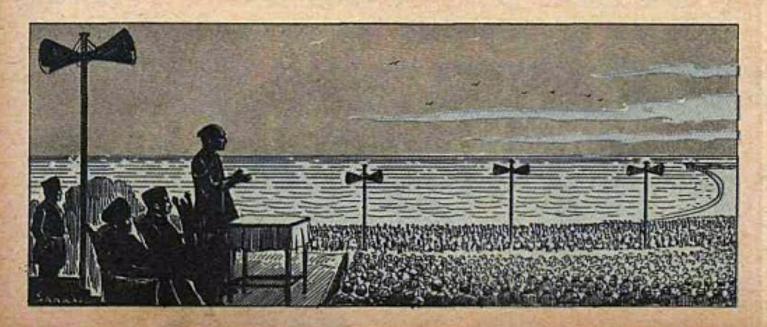
[दुर्गपति वीरेन्द्रसिंह का नवाब कतलूखान ने गला कटवा दिया। उस्मानखान की सहायता से विमला बध्य स्थल पर गई और उसने मरते हुए अपने पति को वचन दिया कि वह बदला लेकर रहेगी। यह जानकर कि जगतसिंह जीवित था, उसने अपनी सारी ज़िन्दगी की कहानी बताते हुए, उसको एक चिट्ठी लिखी। उसे उस्मान पढ़ने लगा। उसे पढ़ते हुए उसे एक आश्चर्यजनक बात मालूम हुई—जब वह छोटा था तब विमला ने उसको चोरों से बचाया था।

उस्मान ने फिर पत्र पढ़ने की कोशिश की। विमला ने यह भी लिखा था, "अगले दिन पठान ने अपने रास्ते जाते हुए मेरी माँ से कहा—"तुम्हारी लड़की ने जो मेरा उपकार अब किया है, उसके बदले मैं अभी कुछ नहीं कर सकता, पर यदि आप कुछ चाहें तो बताइये, दिल्ली जाकर भेज दूँगा।" मेरी माँ ने कहा कि उसे कोई जरूरत न थी। यह काफ़ी है, यदि मेरे पिता का ठिकाना मालूम हो जाये, पठान हाँ कहकर चला गया। उसने दिल्ली जाकर कोशिश तो बहुत की, पर मेरे पिता के बारे में कहीं कुछ नहीं मालूम हुआ। चौदह साल बाद मालूम

श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

हुआ कि मेरे पिता दिल्ली में ही थे, और उन्होंने अभिरामस्वामी नाम रख लिया था।

तब तक मेरी माँ गुज़र ही चुकी थी। पिता का पता लगते ही, काशी में मैंने एक क्षण भी न रहना चाहा। संसार में मेरे पिता के कोई न था। इसलिए मैं अकेली दिल्ली के लिए निकल पड़ी। पहिले तो वे मुझे देखकर बड़े बिगड़े, मैं रोती खड़ी रही। आखिर वे मुझे अपने पास रखने के लिए मान गये। मेरा नाम बदलकर उन्होंने विमला रखा, मैंने उनकी सेवा करके सन्तोष और आनन्द पाया।

मैंने पहिले ही बताया था कि मन्थारण में भी मेरे पिता के कारण एक सैनिक की पत्नी गर्भवती हो गई थी, उसके भी लड़की हुई। इसके कुछ दिन बाद उसका पति भी गुज़र गया। मेरी माँ की तरह उसने भी शारीरिक काम करके, अपना जीवन निर्वाह किया और अपनी लड़की का पालन-पोषण किया था। उस विधवा की लड़की बड़ी होकर, बहुत सुन्दर हुई और आखिर तिलोत्तमा की माँ हुई।

"तिलोत्तमा जब माँ के पेट में थी, तभी पहिले पहल हमारी शादी की बात उठी। वीरेन्द्रसिंह शिष्य होकर हमारे पिता के आश्रम में आया। मेरे पिता ने उससे कहा—"मैं विमला को छोड़कर नहीं रह सकता। यदि तुमने उससे विवाह कर लिया, तो मैं तुम्हारे पास ही रहूँगा।" वीरेन्द्रसिंह ने कुछ खिझकर कहा कैसे एक शूद्र कन्या से विवाह करूँ।" तुमने नीच स्त्री की लड़की से शादी की है कि नहीं? मेरे पिता ने पूछा। उसने कहा कि विवाह के समय वह यह न जानता था कि वह नीच स्त्री की लड़की थी। जब उसने मुझ से शादी करने से इनकार कर दिया, तो

मेरे पिता ने उसको आश्रम में आने से मना कर दिया। यदि वह आया, तो मुझे दिक्कत होगी, जब कभी देखने की मर्ज़ी होगी, तो वह ही किले में चले आयेंगे। मेरे पिता ने यह वीरेन्द्रसिंह से कहा।" जब वीरेन्द्रसिंह ने कुछ दिन आना बन्द कर दिया, तो मुझे बड़ा कष्ट हुआ।

मेरी हालत देखकर मेरे पिता ने कहा कि वह सन्यास स्वीकार करने जा रहे हैं, उन्होंने कहा—"तुम्हें मानसिंह महाराजा की नई रानी की दासी बनाने की व्यवस्था मैंने कर दी है।"

युवराज, मैं तुम्हारे महल में एक अन्तःपुर की स्त्री बन गई। मैं वहाँ बहुत दिन रही, पर तुम्हें यह न मालूम हुआ। तुम अपनी माँ के पास रहा करते थे। मैं जोधपुर की राजकुमारी ऊर्मिलादेवी के पास रहा करती थी। वे मुझे अपने प्राण से भी अधिक प्यारी समझती थीं, उनकी कृपा से मैंने बहुत-सी कलायें सीखीं। शिल्प, संगीत, नृत्य। उन्होंने महाराजा से मेरी प्रशंसा भी की, वे मेरा संगीत बड़े चाव से सुनते। मेरी अच्छी तरह देखभाल करते। उन्हें मेरे पिता से भी बड़ी भक्ति थी, बस, मुझे एक ही कष्ट था कि मैं उस व्यक्ति से दूर थी, जिसे मैंने प्रेम किया था।

"शायद तुम्हें आसमानी याद हो, हम दोनों में बड़ा स्नेह था। पिता से नाराज होकर, तब वीरेन्द्रसिंह दिल्ली आकर रह रहे थे। मैंने आसमानी द्वारा उसके पास खबर भिजवायी। उसने उससे मिलकर मेरा हाल कहा। हम दोनों में पत्र व्यवहार होने लगा। हम दोनों में प्रेम बढ़ता गया। इस तरह तीन साल बीत गये।"

"इतने में वीरेन्द्रसिंह ने एक भयंकर काम किया। वह भिश्ती का वेश बनाकर,

आसमानी के साथ अन्तःपुर में आये और जहाँ मैं सोया करती थी, वहाँ छुप गये। एक दिन मानसिंह महाराजा जहाँ हम छुपे हुए थे वहाँ आये, वीरेन्द्रसिंह को पकड़कर उन्होंने कैद में ड़ाल दिया, मैं घबरा गई कि उनको सजा दी जायेगी। मैं जाकर ऊर्मिलादेवी के पैरों पड़ी। मैं अपने पिता के पैरों पड़ी। उनको, मुझ पर तरस खाना तो अलग, गुस्सा आ गया—"पापिन, क्या तुम में बिल्कुल शर्म नहीं रह गई है?" उन्होंने मुझे डाँटा।

ऊर्मिलादेवी ने मेरी ओर से राजा को मनाया। महाराज ने कहा—"यदि उसने विमला से विवाह किया, तो उसे क्षमा करके छोड़ दूँगा।" यह सुनकर वीरेन्द्रसिंह को गुस्सा आ गया। उसने कहा—"मैं कैद में पड़ा, पड़ा मौत की सजा भुगतने के लिए तैयार हूँ, पर एक शूद्र स्त्री से विवाह करने के लिए तैयार नहीं हूँ। हिन्दू होकर भी आप क्यों मुझ से यह अनुचित काम करने के लिए कहते हैं?" तब महाराज ने कहा—"मैंने अपनी बहिन की शादी युवराज सलीम से की है। तुम ब्राह्मण की लड़की से विवाह करने के लिए क्यों हिचकिचा रहे हो? यदि तुमने उससे विवाह न किया, तो उसके साथ और कौन विवाह करेगा?"

"तब भी वीरेन्द्रसिंह नहीं माना। जब कैद में उनको अच्छी तरह नहीं देखा गया, तो उन्होंने अपनी अर्ध-स्वीकृति देते हुए कहा—"मैं इससे शादी तो कर लूँगा, पर इसे अपने को मेरी पत्नी नहीं बताना होगा, न वह मेरी पत्नी की तरह रहेगी। वह मेरे घर में, मेरी दासी की तरह रहेगी।" मैं इसके लिए मान गई। हम दोनों का विवाह हुआ।

"हमारी शादी जबर्दस्ती की गई थी। उससे पहिले मेरे पति को मुझ पर बड़ा प्रेम और दया थी। शादी के बाद, मैं उनके लिए जहर-सी हो गई। उनका मुझ पर तो गुस्सा कुछ दिनों बाद चला गया, पर महाराज मानसिंह पर क्रोध बना रहा। यह विधि का निर्णय था। मुझे अपने बारे में जो कुछ कहना था, कह दिया है। तिलोत्तमा के बारे में कुछ नहीं लिखा है। तुम उसे भूल जाओ।"

उस्मान ने चिट्ठी पढ़कर लम्बी साँस छोड़ी। "तुमने रक्षा की है, इसके लिए तुम्हारा प्रत्युपकार कभी न कभी ज़रूर करूँगा।"

"क्यों, उस्मान ऐसे मौके पर आशायें दिखाकर, धोखा देना चाहते हो?" विमला ने पूछा।

उस्मान ने अपने हाथ से अंगूठी निकाल कर उसे देते हुए कहा—"इसे तुम अपने पास रखो, इतनी जल्दी कुछ नहीं होनेवाला है। पर जल्दी ही कतलखान का जन्म दिन आनेवाला है। उस दिन बड़ा जलसा होगा। राजमहल में हर कोई खुशी मनाने में मस्त होगा। पहरेदार भी खूब पी पाकर, ऐसे सोयेंगे कि कुछ मत पूछो। उस दिन मैं तुम्हें छुड़वा दूँगा। उस दिन आधी रात के समय, अन्त:पुर के द्वार के पास आ। अगर वहाँ कोई तुम्हें इस तरह की अंगूठी दिखाये, तो तुम उनके साथ सकुशल चले जाना।"
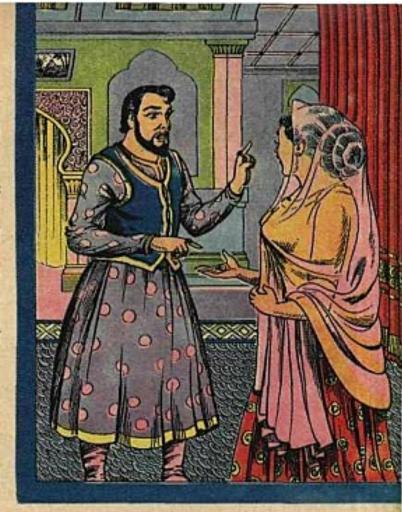
विमला, उनको तरह तरह से धन्यवाद देकर चली गई। उस्मान ने उसे रोककर कहा—"पर तुम अकेले ही जाना, नहीं तो काम तो बिगड़ेगा ही और भी दुनियाँ-भर की आफतें आ पड़ेंगी।"

विमला ने सोचा कि शायद उस्मान न चाहता था कि तिलोत्तमा उनके साथ आये।

इसलिए उसने सोचा—"अगर एक का ही बचकर निकल जाना सम्भव हो, तो तिलोत्तमा को ही जाने दो। मेरा क्या है? मैं, वैसे भी बचकर भाग सकती हूँ।"

वह उस्मान को फिर धन्यवाद देकर, अपनी जगह चली गई।

रोज बीत गये। धीमे-धीमे जगतसिंह की हालत सुधरती जाती थी। ताकत भी आ रही थी। पर जैसे जैसे उसका स्वास्थ्य सुधरता जाता था, वैसे वैसे उसका तिलोत्तमा के बारे में सोचना भी अधिक होता जाता था। जो कोई मिलता, वह उससे तिलोत्तमा के बारे में पूछता, पर किसी ने भी उसके बारे में शुभवार्ता उसके कान में नहीं पहुँचायी। अयाशा भी न जानती थी कि वह कहाँ थी। उस्मान को मालूम था, पर वह बताता नहीं। "वह कहाँ है? वह कहाँ है?" ये प्रश्न युवराज के दिमाग में लगातार गूँज रहे थे। इसलिए वह मुलायम बिस्तर भी उसको बाणों की शय्या की तरह लग रहा था।

यही नहीं, जगतसिंह को एक और चिन्ता सता रही थी। "आगे क्या होगा?" इसका उत्तर देनेवाला भी कोई न था। वह जानता था कि वह कैदी था। यदि वह कैद में न होकर, मुलायम गद्दों पर लेटा था, तो इसका कारण उस्मान और अयाशा की कृपा ही थी। दास और दासियाँ निरन्तर उसकी सेवा करते जाते थे। अयाशा, बहिन से भी अधिक, उसकी देखभाल कर रही थी, पर दरवाज़े पर हमेशा पहरा रहता।

जगतसिंह को जब सेवा शुश्रुषा की आवश्यकता थी, अयाशा ने रात-दिन पास रहकर, उसकी सेवा की। जैसे जैसे उसकी तन्दुरुस्ती ठीक हो गई, उसका आना भी

कम होता गया। जब वह पूर्णतः स्वस्थ हो गया, उसका आना भी बिल्कुल बन्द हो गया।

एक दिन जगतसिंह खिड़की से बाहर देख रहा था कि पीछे से उस्मान ने आकर पूछा—"क्या देख रहे हो?"

"गली में किसी के चारों ओर खड़े होकर लोग मजाक कर रहे हैं।" जगतसिंह ने कहा।

"वह ब्राह्मण मन्थारण किले का ही है।" उस्मान ने कहा।

मन्थारण किले का नाम सुनते ही जगतसिंह ने सोचा कि उसके द्वारा तिलोत्तमा के बारे में कुछ मालूम हो सकेगा, इसलिए उसने पूछा—"तो उसका नाम क्या है?"

"गजपट, बजपट, कुछ ऐसा ही नाम है।" उस्मान ने कहा।

"बंगाली मालूम होता है। आते जाते लोगों का विनोद करता देख, अचरज होता है।"

दिग्गज के बारे में उस्मान ने पहिले सुन तो रखा था—पर उससे उसने यह न अनुमान किया था कि वह खतरनाक

आदमी था। इसलिए उसने जगतसिंह से कहा—"अगर चाहिए, तो उस ब्राह्मण को बुलाया जा सकता है।"

एक आदमी जाकर, दिग्गज को बुला लाया। उस्मान ने उससे पूछा—"आप ब्राह्मण ही हैं न?"

दिग्गज ने हाथ झाड़कर कहा—"असारे खलु संसारे सारं श्वशुर मन्दिरं।" यानि निस्सार संसार में, यदि कोई चीज़ सारवाली है, वह ससुर का घर है।

जगतसिंह ने हँसी रोककर दिग्गज को नमस्कार किया। दिग्गज ने कहा—

"खुदा, खान, बाबू को अच्छी तरह देखें।" "पंडित जी, मैं मुसलमान नहीं हूँ। हिन्दू ही हूँ।" युवराज ने कहा।

दिग्गज ने सोचा कि वह युवक झूट कहकर, उसे धोखा दे रहा था—इसलिए उसने कहा—"खान साहेब, मैं आपके पैरों का दास हूँ। आप मेरा अपमान न कीजिये।"

"आप मन्थारण के हैं न? आपका नाम दिग्गज है। मन्थारण की खबरें कुछ सुनाइये।" जगतसिंह ने कहा।

"अभिरामस्वामी भाग गये हैं न।" दिग्गज ने कहा।

"और वीरेन्द्रसिंह?" जगतसिंह ने पूछा।

"नवाब ने उन्हें मरवा दिया है।" दिग्गज ने कहा।

जगतसिंह ने उस्मान की ओर मुड़कर पूछा—"क्यों, वह ब्राह्मण झूट बोल रहा है?"

उस्मान ने यह बताकर कि वीरेन्द्रसिंह की भरे दरबार में सुनवाई हुई थी और उसको मौत की सज़ा दी गई थी। दिग्गज से कहा—"अब तुम जा सकते हो।"

युवराज ने उससे रोककर पूछा, और विमला का क्या हुआ? दिग्गज ने बताया कि विमला को नवाब की रखैल बना दिया गया है। युवराज पूछे बगैर न रह सका कि तिलोत्तमा का क्या हुआ। उसने बताया कि उसको भी रखैल बना दिया गया था।

जगतसिंह ने उस्मान की ओर मुड़कर कहा—"तुम नवाब की सेवा नहीं कर रहे हो, एक पिशाच की सेवा कर रहे हो।"

[अभी है]

व्यर्थ प्रयत्न

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा।

तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, लोग दूरदृष्टि न होने के कारण खुद तो कष्ट उठाते ही हैं दूसरों को भी कष्ट देते हैं। कहीं शतकेतु के प्रयत्न की तरह तुम्हारा प्रयत्न भी व्यर्थ न चला जाये? ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, तुम्हें शतकेतु की कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

कभी शूरमागध देश के राजा के शतकेतु और वीरकेतु नाम के दो लड़के थे। जब राजा गुजर गया, तो शतकेतु राजा बना। ठीक कहा जाये तो वीरकेतु

बेताल कथाएँ
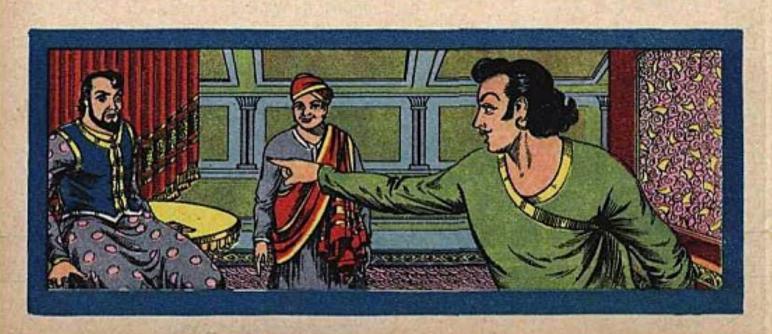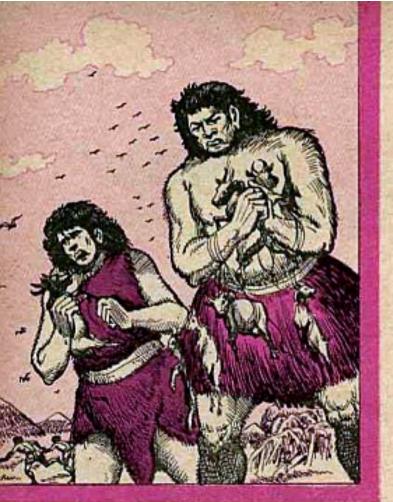
राजा बनने के योग्य न था। परन्तु वह बड़ा अभिमानी था, किसी राजा के नीचे नहीं रह सकता था। इसलिए वीरकेतु अपने भाई के राज्याभिषेक के बाद शूरमागध देश छोड़कर चला गया। अश्वकर्ण नामक एक छोटे देश में उसने अपना राज्य स्थापित कर लिया।

वीरकेतु के सहायक वर्ग में छः मुख्य थे। उनमें गोवर्धनाचार्य एक था। उसने वीरकेतु को युद्ध विद्या सिखाई थी।

वीरकेतु और उसके साथियों ने मिलकर अश्वकर्ण में आदर्श शासन की व्यवस्था की। राज्य छोटा था, पर वीरकेतु का शासन इतना अच्छा था कि देश सम्पन्न और शक्तिवान हो गया।

वीरकेतु का विजयकेतु नाम का लड़का था। यह लड़का छुटपन से ही, छोटी उम्र में ही बड़ा साहस और शौर्य दिखाने लगा। इसलिए उसको युद्ध विद्या सिखाने के लिए उसने गोवर्धनाचार्य को नियुक्त किया। विजयकेतु ने इस विद्या में असाधारण प्रवीणता दिखाई।

चौदह वर्ष की उम्र में ही उसने बड़े बड़े योद्धाओं से मुकाबला करने की शक्ति दिखाकर सबको चकित कर दिया।

जब विजयकेतु अट्ठारह वर्ष का था, तो खबर मिली कि दो राक्षस अश्वकर्ण देश की सीमा पर आकर फसलें खराब कर रहे थे। पशुओं को उठा ले जा रहे थे, जिस किसी को चाहते उसे मार रहे थे। घर, बाग वगैरह, नष्ट कर रहे थे। लोगों को सता रहे थे। राजा, वीरकेतु कुछ सैनिकों को साथ लेकर राक्षसों को मारने निकला। वह बहुत जगह घूमा। लेकिन कहीं उसे राक्षस न दिखाई दिये। वे कहीं पहाड़ों में छुप छुपा गये थे। आखिर निराश हो,

वीरकेतु को अपने नगर वापिस आना पड़ा। तुरत राक्षसों ने फिर अपने हथकँड़े शुरु कर दिये।

विजयकेतु को एक बात सूझी। उसने अपने गुरु से कहा—"बिना किसी को साथ लिए यदि हम दोनों निकले, तो इन राक्षसों का पता अवश्य लगेगा। क्या उन दोनों को हम दोनों नहीं मार सकते हैं?"

अपने शिष्य की यह बात सुनकर गोवर्धनाचार्य बड़ा खुश हुआ। वह यद्यपि वृद्ध था, पर उसका पराक्रम कम न हुआ था।

वे दोनों तलवारें कमर में बाँधकर, हाथ में भाला लेकर राक्षसों को खोजते निकले। वे बहुत घूमे पर कहीं उनको राक्षसों का पता न लगा।

वे अपने राज्य के दक्षिण की ओर के पहाड़ों में गये। मैदान और पहाड़ की तलहटी में घने जंगल थे और उनमें जंगलियों के गाँव थे। गोवर्धन ने मालूम कर लिया कि वे राक्षसों के सहायक न थे और यदि राक्षस मारे जाते, तो वे बहुत खुश होते।
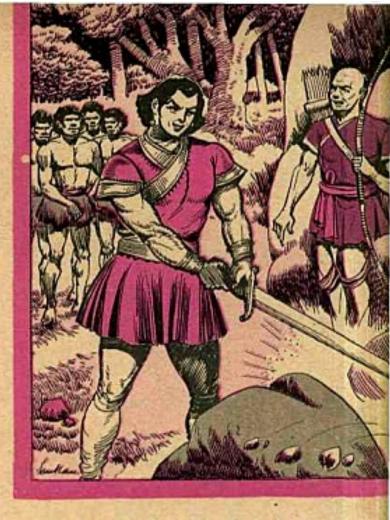
जंगलियों ने उनकी एक और मदद भी की। विजयकेतु और गोवर्धन की तलवारें देखकर उन्होंने कहा—"क्या तुम इन छोटी मोटी तलवारों से राक्षसों को मार सकोगे? हम ऐसी लोहे की तलवारें बनायेंगे, जिनसे पत्थर भी काट दिये जायें। उनकी मदद से हमें राक्षसों से बचाओ।"

उनकी बनाई तलवारें लेकर गुरु और शिष्य, पहाड़ों की ओर चले। उन्हें एक जगह राक्षसों के पग चिह्न दिखाई दिये। जब उन्हें देखते-देखते, वे कुछ

दूर गये, तो एक बड़ी गुफ़ा दिखाई दी। जब वे यह सोच रहे थे कि राक्षस उसी में छुपे हुए होंगे, तो एक राक्षस पत्थर की एक बड़ी गदा लेकर, बाहर उनकी ओर भागता आया। उसने गोवर्धन का उससे सिर तोड़ने का प्रयत्न किया। गोवर्धन बड़ी चतुराई से, गदे से बचता रहा। उसी समय, विजयकेतु ने राक्षस के पेट में भाला भोंकना चाहा—परन्तु तभी, गुफ़ा में से एक राक्षसी आयी, पीछे से, उसे पकड़कर वह गुफ़ा में भागने लगी।

गोवर्धन ने यह देखा। राक्षस ने जिस गदे से उसे मारना चाहा था, उस पर पैर रखकर वह उठा और अपनी तलवार से राक्षस का सिर काट दिया। फिर भागा भागा गया और उसी तलवार से उसने राक्षसी के कन्धे पर मारा।

इस तरह दोनों राक्षस एक ही समय मारे गये। गुरु शिष्य, जब नगर वापिस गये, तो लोगों ने उनके बल शौर्य की विशेषकर गोवर्धनाचार्य के पराक्रम की बड़ी सराहना की। इसके कुछ दिनों बाद ही वीरकेतु मर गया, विजयकेतु
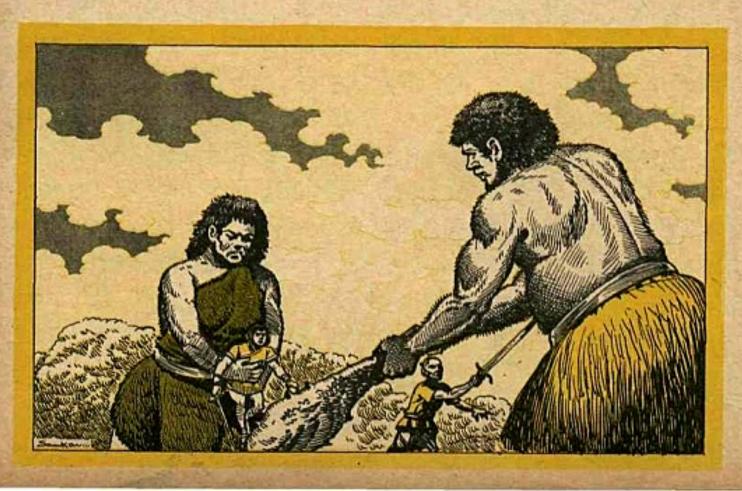
राजा बना। जिन्होंने राज्य स्थापित करने में, उसके पिता की मदद की थी, विजयकेतु ने उनकी मदद ली और अपने छोटे राज्य में इस तरह शासन करता रहा कि वह और राज्यों के लिए आदर्श प्राय हो गया।

अपने भाई के लड़के को इतनी प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा मिलती देख, शूरमागध के राजा शतकेतु ईर्ष्या से जलने लगा। उसके भेजे हुए एक दूत ने विजयकेतु के पास आकर कहा—"आप हमारे सामन्त हैं— परन्तु आपने अभी तक कर नहीं दिया है। यदि आपने कर न दिया, तो जल्दी कोई कार्यवाही करनी होगी—यह महाराजा ने आपको कहलवाया है।"

"हम स्वतन्त्र हैं। हम किसी के सामन्त नहीं हैं। यदि वे कर चाहते हों, तो जाकर, हमारे ताया से कहो कि वे स्वयं आकर उसे ले जायें।" यह कहकर विजयकेतु ने दूत को भेज दिया।

इस उत्तर पर उसके मन्त्री खुश तो हुए पर वे जानते थे कि शतकेतु की असंख्य सेना का सामना करना कोई मामूली बात न थी। इसलिए उसने शतकेतु की
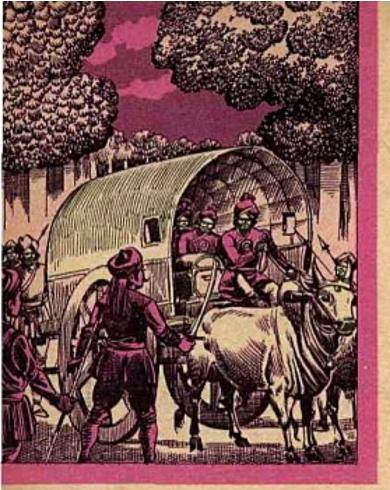
सेना का मुकाबला करने के लिए एक चाल सोची।

जब शतकेतु युद्ध के लिए अपनी सेना के साथ आ रहा था और जब वह रात को कहीं पड़ाव कर रहा था, तो विजयकेतु के साहसी सौ योद्धाओं ने, आधी रात के समय, उसके डेरों पर हमला किया, सेना को तितर-बितर कर दिया और युद्ध को होने से बचाया।

जब उन्होंने डेरों को लूटा, तो उनको बहुत धन मिला। विजयकेतु उसे अपनी छावनी में ले गया। उसे फिर अपने

विश्वासपात्र मित्रों के साथ, अपनी राजधानी भेज दिया। परन्तु शतकेतु के योद्धाओं ने, उन पाँचों को घेर लिया और वह धन भी ले लिया।

इस तरह विजयकेतु की चाल न चल सकी। अब अपने ताया को वह युक्ति से नहीं जीत सकता था। जो पाँच व्यक्ति, युद्ध चला सकते थे, वे शत्रुओं के हाथ आ गये थे। उनमें उसका गुरु गोवर्धन भी था।

युद्ध में विजयकेतु का जीतना असम्भव था और युद्धभूमि में लड़ते-लड़ते मर जाने के लिए विजयकेतु तैय्यार ही था। पर महावीर योद्धाओं को, उनका ताया अवश्य मौत की सज़ा देगा। इससे अच्छा तो यही था कि यूँ अपमानित होकर, वह जंगलों में भाग जाये।

यह सोचकर, विजयकेतु ने अपने ताया के पास सुलह करने के लिए एक आदमी भेजा। उसके दूत ने जाकर, शतकेतु से कहा—"महाराज! यदि आपने पकड़े हुए योद्धाओं को छोड़ दिया, तो हमारे राजा, आपको अश्वकर्ण राज्य ही सौंपने के लिए तैय्यार हैं।"
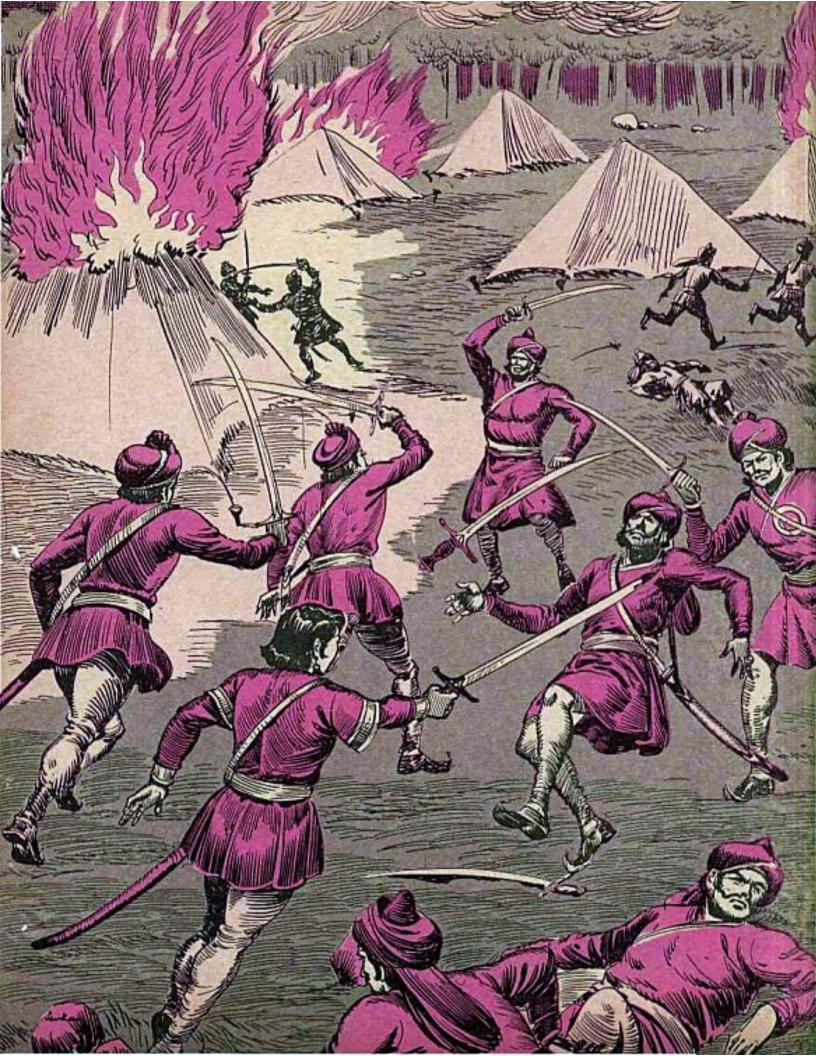
यह सन्धि करने के लिए शतकेतु मान गया। विजयकेतु फिर अपने साथियों से मिल सका। वे भी उसके साथ वनों में रहने के लिए मान गये।

इसके एक साल बाद शतकेतु मर गया चूँकि उसके कोई सन्तान न थी इसलिए शूरमागध और अश्वकर्ण के सिंहासन दोनों ही विजयकेतु को मिला।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, जब शतकेतु यह जानता था कि उसका, विजयकेतु के सिवाय कोई और वारिस न था, तो उसने उस पर आक्रमण क्यों किया? कर के लिए दूत का भेजना, उस पर आक्रमण करना, यह सब अनावश्यक ही था न? यदि इन सन्देहों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"राज्य करना हो तो उसे निर्विघ्न करना है और आजीवन उसे बढ़ाता जाना है। राज्याकाँक्षा बन्धुत्व की परवाह नहीं करती। उसके बाद कौन राजा बनेगा, यह चिन्ता किसी राजा को नहीं सताती। यदि उसका लड़का उसके राज्य करने में अड़चन पैदा करे, तो राजा उसे सह नहीं सकता। यही कारण है कि विजयकेतु ने भी आजीवन, अपने ताया का सामन्त नहीं होना चाहा, अपने से बलवान को उकसाया। उस पर उसने धोखे से हमला भी किया।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा।

[कल्पित]

विपरीत पुराण

श्रीकृष्णदेवराय के दरबार में अष्टमहारत्न नाम से आठ बड़े कवि थे। उनमें तेनाली रामलिंग एक था। वह औरों की तरह कवि और विद्वान ही न था साहसी और सूझबूझवाला भी था।

एक दिन राय ने रामलिंग कवि को राज्य के कार्य पर दिल्ली बादशाह के पास अधिकार पत्र देकर भेजा।

सुभद्र नाम के मित्र को साथ लेकर, विजयनगर से दिल्ली के लिए वह निकला। रात में वे किसी गाँव में पड़ाव किया करते।

एक दिन शाम को वे भर्गदुर्ग गाँव पहुँचे। उस गाँव में एक ब्राह्मण के घर ठहरे। बातों बातों में उस गाँव के जमीन्दार के बारे में कुछ विचित्र बातें मालूम हुई।

उस जमीन्दार का नाम दुष्टवर्मा था। उसके पास दो तीन गाँव ही थे। परन्तु उसके पुरखे मशहूर थे। उन्होंने कई ब्राह्मणों को भूमि दान में दी थी। वह रोज गाँव के ब्राह्मणों को बुलाकर, पुराण सुनाने के लिए कहता। यदि कोई पुराण पढ़कर अर्थ बताता, तो कहा कहता—"तुम तो वही अर्थ बता रहे हो जो सबको मालूम है, इसका विशेषार्थ, गूढ़ार्थ बताओ।" यदि वह बता पाता, तो कहा कहता—"तुम में बिल्कुल बुद्धि नहीं है।" यदि पुराण सुनाने के लिए आने से इनकार करता, तो उनको खेती न करने देता। ठीक तरह जीने न देता। तरह तरह से तंग करता।

दुष्टवर्मा की बातें सुनकर, रामलिंग ने उसको सबक सिखाने की सोची। उसने

श्यामशास्त्री
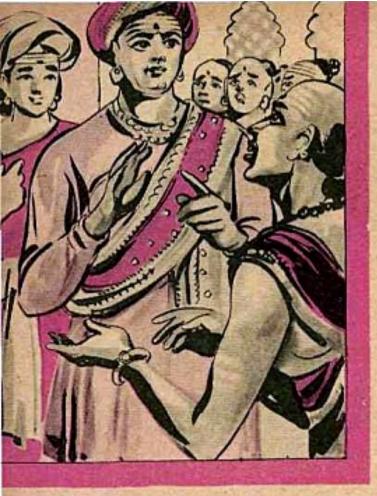
अपने मित्र सुभद्र से बातचीत की। अगले दिन अपनी यात्रा पर न जाकर, वे दुष्टवर्मा के घर गये।

रामलिंग को देखकर, दुष्टवर्मा ने पूछा—"कौन हो तुम?"

"हम अद्भुत पौराणिक हैं। हम काशी के हैं।" रामलिंग ने कहा।

"यदि आप हमारे बारे में जानते होते, तो यूँ सगर्व न कहते कि पौराणिक हैं।" दुष्टवर्मा ने कहा।

"आपकी बात क्यों नहीं जानता? आपके बारे में तो काशी में भी बहुत कहा सुना जा रहा है। इसलिए ही, पुराण वाचन में हम अपनी प्रवीणता ही दिखाने आये हैं।" रामलिंग ने कहा।

"इसके बारे में कुछ और सुनाओ।" दुष्टवर्मा ने कहा।

"हम एक सौ दस तरीकों से पुराण पढ़ सकते हैं। कभी की गुजरी बातें हम इस तरह सुना सकते हैं, जैसे अभी गुजरी हों। भारत में रामायण, रामायण में भारत, भागवत में भारत और रामायण इस सब में ब्राह्मणार्थ दिखा सकते हैं। हम अपने बारे में चाहे कुछ भी बतायें, पर तब भी पूरा न बता सकेंगे। हम अपना परिचय स्वयं कैसे और दें?" रामलिंग ने कहा।

उसी दिन दुष्टवर्मा ने पुराण वाचन की व्यवस्था की। रामलिंग अपनी जगह आ गया। जिन ब्राह्मणों ने उसे घेर लिया था, उनसे जो कुछ कहना था कहकर उस दिन रात को सुभद्र को साथ लेकर, ब्राह्मण जब उसके पीछे छड़ी लेकर चलने लगे, तो वह दुष्टवर्मा के घर गया। वहाँ दुष्टवर्मा और ग्राम के ब्राह्मण पहिले ही चटाइयों पर बैठे थे। रामलिंग और सुभद्र के लिए अलग आसन लगे हुए थे। वे

उन पर जाकर बैठ गये और उपस्थित लोगों की ओर इधर-उधर देखने लगे।

दुष्टवर्मा ने महाभारत के युद्ध की घटनाओं के बारे में बताने के लिए कहा। सुभद्र ने महाभारत का एक पद्य पढ़ा। संस्कृत में एक ही शब्द के अनेक अर्थ हैं। इसी बहाने रामलिंग ने बताया कि रावण ने पाण्डवों की युद्ध में सहायता माँगी थी और कर्ण ने रावण को जीता था। जहाँ लिखा था, वायुसुत ने सुशर्मा को मारा, तो उसने बताया कि हनुमान ने सुशर्मा को मारा। गुरु जब उपवास कर रहा था, तो धृष्टद्युम्न ने उसके बाल पकड़कर उसको काट दिया। इसका मतलब रामलिंग ने यों बताया। बृहस्पति के बालों को धृष्टद्युम्न ने काट दिया। हरि का अर्थ बन्दर भी होता है। इसलिए जब आया कि हरि कंस की ओर लपका, तो उसने बताया कि सुग्रीव ने कंस पर हमला करके मारना चाहा।

दुष्टवर्मा चकित हो गया। "यह क्या पुराण है? सब मिल-मिल कर सुना रहे हो। मजाक कर रहे हो?"

"हाँ, हाँ, यही भारत में रामायण, रामायण में भारत और दोनों में
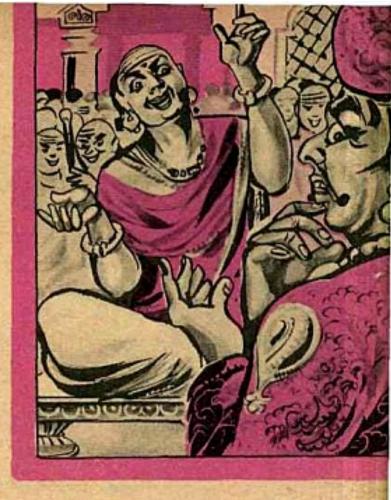
भागवत होने का मतलब है।" रामलिंग ने कहा।

"तुमने तो कहा था कि पुराण की कथाओं को इस तरह सुनाओगे, जैसे आँखों देख रहे हों। उसे भी देखकर, पुराण समाप्त कर देंगे।" दुष्टवर्मा ने कहा।

"जैसी आपकी आज्ञा।" कहकर, रामलिंग सुनाने लगा—"कर्ण ने रावण को यूँ लात मारी।" कहकर, उसने दुष्टवर्मा को लात मारकर, उसकी कुर्सी से गिरा दिया। "धृष्टद्युम्न ने बृहस्पति के केश यों काटे।" कहकर, उसने चाकू से

दुष्टवर्मा के बाल काट दिये। "हनुमान ने सुशर्मा का घर यूँ जला दिया।" कहकर, उसने दुष्टवर्मा के घर को आग लगा दी।

दुष्टवर्मा गुस्से में रामलिंग को मारने गया। पर ब्राह्मणों ने अपनी लाठियों से रामलिंग की रक्षा की। दुष्टवर्मा ने गाँववालों को बुलाया। रामलिंग के कारनामों के बारे में बताकर, उसकी सुनवायी करके, उसको सज़ा देने के लिए कहा।

"क्यों यह किया?" ग्रामपंच ने पूछा।

"बिना उनके कहे, मैंने कुछ नहीं किया है। चाहें, तो आप उपस्थित ब्राह्मणों से पूछकर देख लीजिये।" रामलिंग ने कहा।

"दुष्ट कहीं के....यह कहकर, अद्भुत अर्थ बताओगे—ऊटपटाँग बकवास क्यों की? यह कहकर कि पुराण की घटनाओं को दिखाओगे, मुझे पीटकर, मेरे बाल काटकर, मेरे घर को ही आग लगा दी?" दुष्टवर्मा ने कहा।

"यदि कोई कहे कि मैंने पुराण गलत सुनाये हैं, तो मैं उसका सिर काट दूँगा। मेरी सुनवायी करने की यहाँ किसी को अधिकार नहीं है। मैं विजयनगर के सम्राट की ओर से दिल्ली के बादशाह को देखने जा रहा हूँ। यह देखिये मेरा अधिकार पत्र।" रामलिंग ने ऊँची आवाज़ में कहा।

सब वह पत्र देखकर चकित होकर पीछे हट गये। परन्तु उस ग्राम के ब्राह्मणों ने उससे कहा—"बाबू, अब यह दुष्ट फिर पुराण की बात नहीं करेगा। हमारी आपने रक्षा की।" उन्होंने दो दिन उसको अपने घर अतिथि के तौर पर रखा। फिर उसे अपने रास्ते पर भिजवा दिया।

अप्सरा की सन्तति
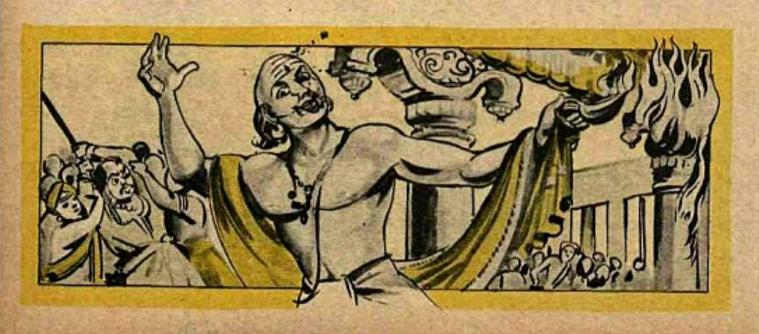
आदिकाल में मानव बदसूरत होते थे। उनमें सुन्दर व्यक्तियों के पैदा होने का कारण एक अप्सरा है। उसकी कथा यूँ सुनाई जाती है।

देवलोक में सुभ्रम नाम की एक अप्सरा थी। वह भी और अप्सराओं की तरह किसी देवता से विवाह करके, स्वर्ग के सुख अनुभव कर सकती थी। पर उसने ऐसा न करके भूलोक में जाकर वहाँ रहने के सपने देखने लगी। साथ की अप्सराओं ने उसे बताया था कि वहाँ स्वार्गिक सुखों के लिए तरह तरह के व्रत, दान, यज्ञ और तपस्यायें किया करते थे। परन्तु इससे भी सुभ्रम की भूलोक में रहने की इच्छा कम न होकर अधिक हो गई।

आखिर यह खबर इन्द्र के पास गई। इन्द्र ने सुभ्रम को बुलाकर कहा—"सुना है, तुम भूलोक में रहने के लिए छटपटा रही हो। स्वर्गलोकवासियों के लिए और लोकों में जाने में कोई गलती नहीं है। पर यदि तुम भूलोक गये और वहाँ की कोई चीज़ तुमने छुयी, तो तुम तुरत पत्थर हो जाओगे। यह याद रखना।"

इन्द्र ने जब यह कहा, तो इसका मतलब था कि उसको इन्द्र की अनुमति मिल गई थी। वह सुभ्रम, जो तब तक इसी चिन्ता में थी कि कैसे इन्द्र को अपनी भूलोक जाने की इच्छा बताई जाय और उसकी अनुमति पायी जाये, अब इन्द्र से विदा लेकर, भूलोक जाने के लिए तैय्यार हो गई।

वह अपनी सहेली को लेकर, भूलोक आयी। आकाश में विचरती, भूमि की ओर आश्चर्य से देखती रही।

जब वह अपनी सहेली के साथ भूमि के पास ही मँड़रा रही थी, तो एक आदमी, एक ऊँचे चम्पक पेड़ पर चढ़कर फूल तोड़ रहा था। उसे उन्हें देखकर आश्चर्य हुआ। आकाश में उड़ती-उड़ती, वे जब पास आयीं, तो उसने फूल उन पर फेंके। उनमें से एक सुभ्रम को लगा और वह काली पत्थर बनकर नीचे ज़मीन पर गिर गई।

उसकी सहेली ने अपने ऊपर फूल नहीं गिरने दिये। वह बचकर, इन्द्र के पास चली गई और जाकर सुभ्रम का सारा वृत्तान्त सुनाया।

इन्द्र ने सब सुनकर कहा—"यदि वहाँ से किसी ने वह पत्थर हटाया, तो उसका पूर्व रूप आ जायेगा और यदि किसी मनुष्य से विवाह करके, उसके सन्तान हुई, तो मैं उसे फिर स्वर्ग बुला लूँगा।"

"देवेन्द्र! जंगल में पड़े एक पत्थर को लोग क्यों हिलायें? मेरी सहेली, कब तक यूँ पत्थर बनी रहेगी?" सभ्रम की सहेली ने कहा।

"इसके लिए भी कोई तरीका खोजना होगा।" इन्द्र ने कहा।

इतने में पेड़ पर के मनुष्य को ऐसा लगा, जैसे वे अदृश्य हो गये हों। वह उनके लिए बहुत देर आकाश में देखता रहा। आखिर अपना काम पूरा करके, पेड़ से उतर कर, जब वह चलने लगा, तो पास में, उसने एक काला पत्थर देखा।

"जब मैं, पहिले इस तरफ़ से आया था, तो यह पत्थर न था। इतने में यह कहाँ से आ गया?" सोचते हुए, उसने उस पत्थर को पैर से मारा। तुरत पत्थर में से चार मोती लपके। वह चकित हो उठा। उसने वे मोती चुन लिये। उसने

फिर पत्थर को पैर से मारा। पर इस बार उसमें से कुछ न निकला।

उसने गाँव जाकर, अपने मित्रों से जो कुछ गुज़रा था, बताया। पर उन्होंने विश्वास न किया कि आकाश में स्त्रियाँ उड़ रही थीं और पत्थर में से मोती निकले थे। परन्तु उनमें से कुछ वह पत्थर देखने आये। उन्होंने भी उसे लात मार कर देखा। जिस किसी ने पहिली बार मारा, उसको चार मोती मिल गये। लेकिन उसके बाद नहीं मिले।

चूँकि हर किसी को, पहिली बार मारने से ही मोती मिलते थे, इसलिए यह बात किसी ने किसी और से नहीं छुपाई। जल्दी ही यह आसपास के लोगों को मालूम हो गई। लोग ऐसे आते, जैसे किसी तीर्थ पर जा रहे हों और मोती चुनकर चले जाते।

जैसे जैसे लोग अधिक होते गये, वैसे वैसे पत्थर के पास भीड़ बढ़ती गई। लड़ाई झगड़ा होने लगा। अधिकारियों ने आकर कहा कि जो पत्थर पर लात मारने आयें, उनमें क्रम या पद्धति की व्यवस्था की जाये। यह बात राजा तक पहुँची।
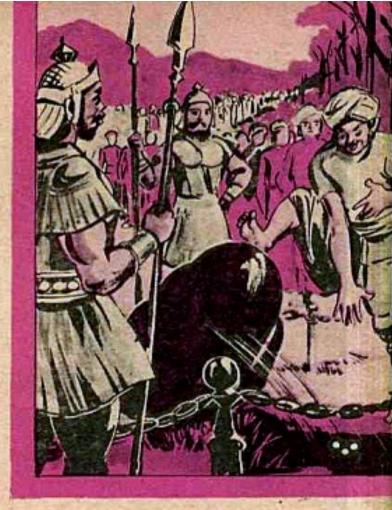
उसने आज्ञा घोषित की कि जिन-जिनको मोती मिलें, वे राजा से चीट लें और मोतियों का एक भाग राजा को दें। दूर प्रदेश से आनेवालों के लिए रास्ते में पड़ाव और सराय बनाये गये।

जल्दी ही उस पत्थर के बारे में पड़ोस के राज्यों को भी मालूम हुआ और राजाओं को वह पत्थर कल्पवृक्ष-सा लगा। रोज नये आदमी पैदा हो ही रहे थे और हर पैदा हुआ बच्चा, चार चार मोतियाँ भी पा लेता था और उनमें से कुछ राजा के खज़ाना में मोती पहुँच रहे थे। इसलिए

आसपास के राजा, पत्थरवाले राजा से युद्ध करने के लिए तैय्यार हो गये। यह जानकर, राजा ने अपने सैनिकों की आज्ञा दी कि वे उस पत्थर को सुरक्षित उसके किले में लाकर रख दें। सैनिकों ने, बड़ी मुश्किल से इधर-उधर हिलाकर, उस पत्थर को एक तरफ़ कर दिया।

तुरत पत्थर अदृश्य हो गया, एक बहुत ही सुन्दर स्त्री सामने खड़ी हो गई। उनमें से कुछ देख डरे, सब के सब अचरज में पड़ गये।

"तुम कौन हो? क्यों यूँ पत्थर के रूप में हो? कौन-सा देश है तुम्हारा? तुम्हारा पति कौन है?" उन्होंने उससे पूछा।

"मेरा कोई एक देश नहीं है। पति नहीं है। मैं खुद अपराध करके, इस तरह पत्थर हो गयी हूँ। अब तुम्हारी दया से फिर पूर्व रूप में आ गयी हूँ। यदि तुम में से किसी ने मुझ से विवाह करना चाहा, तो मैं उसकी पत्नी होने के लिए तैय्यार हूँ।" सुभ्रम ने कहा।

वे सैनिक, उसको पत्नी बनाने में हिचकाये। परन्तु उनमें से एक ने साहस करके कहा—"मेरी अभी शादी नहीं हुई है। मुझ से शादी कर लो।" सुभ्रम इसके लिए मान गई।

उन दोनों का विवाह हो गया। सुभ्रम ने एक साथ ही एक लड़के और एक लड़की को जन्म दिया और स्वर्ग चली गई। तब तक मनुष्यों की आकृति ठीक नहीं होती थी। परन्तु सुभ्रम के दोनों बच्चे देवताओं की तरह सुन्दर थे। आज कल, जो हम सुन्दर स्त्री-पुरुषों को देखते हैं, वे सब उन्हीं की सन्तान हैं।

शीशे के पहाड़ पर राजकुमारी

उत्तान देश का राजा बड़ा स्वाभिमानी और पराक्रमी था। जब युद्ध नहीं हो रहा होता, तो वह अपना पराक्रम शिकार में दिखाता। वह भयंकर पशुओं का ही शिकार करता और शिकारियों की तरह छोटे-मोटे जानवरों को न मारता।

एक बार उसने सारा जंगल छान डाला पर कहीं कोई हिंसक जन्तु न मिला। जब अन्धेरा होने पर वह घर वापिस आ रहा था, तो उसको पौधों के पीछे कुछ हिलता दिखाई दिया। राजा ने जब उसका पीछा किया, उसको खदेड़ा, घेरा, तो वह बौना जंगली आदमी निकला। उसके सिर के बाल बिखरे हुए थे। लम्बी-सी दाढ़ी थी।

उस जंगली आदमी को राजा अपने घर ले गया। उसके लिए एक ऐसा कमरा बनवाया, जिसमें खिड़कियाँ वगैरह न थीं, भोजन देने के लिए एक छेद बना दिया गया था। कमरे के दरवाज़े में ताला लगवा दिया गया और उसकी चाबी उसने अपने अन्तःपुर में रखवायी और साथ यह घोषणा भी कर दी, जो कोई उसको भागने देगा, उसको मौत की सज़ा दी जायेगी।

कुछ समय बाद उत्तान देश के समीपवर्ती राज्य पर शत्रुओं ने आक्रमण किया। उस देश के राजा ने, उत्तान देश के राजा की सहायता माँगी। युद्ध के लिए जाते जाते, राजा ने जंगली आदमी की कोठरी की चाबी रानी को देकर, उसे सुरक्षित रखने के लिए कहा। उसने, उस चाबी को साड़ी में बँधे चाबी के गुच्छे में हिफ़ाज़त से डाल लिया।

उत्तान राजा का एक ही लड़का था। उसका नाम प्रमद्वर था। राजा को उस पर बड़ा प्यार था।

एक दिन प्रमद्वर गेंद से खेलता खेलता, जंगली आदमी की कोठरी के पास आया और उसकी दीवार पर गेंद मारता खेलने लगा और ऐसा हुआ कि गेंद, भोजन पहुँचानेवाले छेद में से अन्दर भी चली गई। परन्तु उसी समय वह गेंद उस छेद में से बाहर भी आ गई। यह जानकर कि कोठरी में बन्द जंगली, उससे खेलने को तैय्यार था उसने गेंद फिर फेंकी, गेंद फिर वापिस आ गई। फिर प्रमद्वर ने गेंद उसमें फेंकी, पर इस बार वह वापिस न आयी।

प्रमद्वर छेद के पास गया। अन्दर बन्द जंगली के हाथ में अपनी गेंद देखकर, उसने कहा—"मेरी गेंद है, मुझे वापिस दे दो।"

मुझे छुड़वा दो, तब मैं गेंद दूँगा।" जंगली आदमी ने कहा।

प्रमद्वर न जानता था कि जंगली आदमी के छुड़ाने पर कितनी सख्त सज़ा दी जायेगी। उसने अपनी माँ को बिना बताये उसकी साड़ी में बँधी चाबी ले ली—कोठरी की दरवाज़ा खोला, जंगली आदमी को बाहर जाने दिया। अपनी गेंद ले ली, फिर जाकर ताले की चाबियाँ माता की साड़ी में बाँध दी।

यह तो मालूम हो गया कि बौना भाग निकला था, पर कैसे भाग सका, यह न जाना जा सका। इस बीच राजा समीपवर्ती राजा को विजय दिलाकर, वापिस आया। उसे मालूम हुआ कि जंगली आदमी कोठरी में से निकल भागा था। राजा ने गुस्से में सब से पूछताछ की, परन्तु कोई नहीं

बता पाया कि जंगली आदमी कैसे फरार हो गया था। पिता को क्रुद्ध देखकर प्रमद्वर ने डरकर, जो कुछ उसने किया था, उसके बारे में बता दिया।

राजा घबरा गया। अपने प्यारे लड़के को कैसे मरवाये? यदि नहीं मरवाता है, तो उसकी प्रतिष्ठा भंग होती है। आखिर उसका स्वाभिमान ही जीता—उसने दो सैनिकों को बुलाकर कहा—"इसे जंगल में ले जाकर, इसे मारकर, इसका हृदय लाकर मुझे दिखाओ।" यह सुन, राजधानी में हाय हाय मच गई।

सैनिक राजकुमार को जंगल में ले गये। परन्तु उस बच्चे को मारने के लिए उनका हाथ नहीं उठा। वे प्रमद्वर को बहुत दूर ले गये। "बाबू, हम तुम्हें नहीं मार सकते। तुम किसी और राज्य में जाकर आराम से रहो, पर यदि तुम इस राज्य में आये, तो हमारे सिर काट दिये जायेंगे। भगवान तुम्हारी मदद करें।"

प्रमद्वर उस जंगल में चलता गया। सैनिकों ने एक सूअर मारा और उसका दिल ले जाकर, राजा को दिखाया। राजा उसे देखकर मूर्छित हो गया।
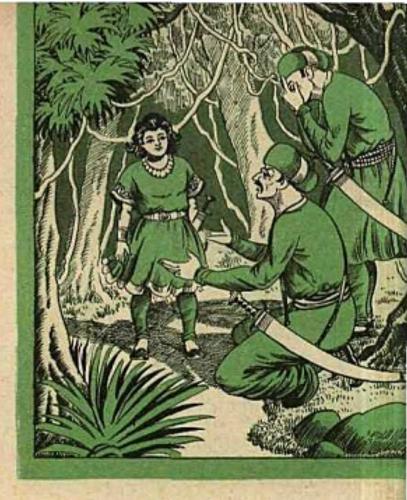
जंगल पार करते ही प्रमद्वर को एक किले की ऊँची ऊँची दीवारें दिखाई दीं। जंगल और किले के बीच में एक गड़ियारा दिखाई दिया। प्रमद्वर ने अपने कपड़े उसे दे दिये और उसके कपड़े स्वयं पहिन लिये। उसके चीथड़े पहिनकर, वह किले में घुसा। उसने राजा के पास जाकर कहा कि वह कुछ काम चाहता था। राजा ने कुछ भेड़ें उसे चराने को दीं।

उस किले में रहनेवाले राजा का नाम शशिवर्ण था। शशिकला नाम की उसकी एक लड़की थी, वह बड़ी सुन्दर थी। किले

में हर कोई उसे चाहता था। प्रमद्गर भी उसे कभी-कभी देखकर, बड़ा खुश होता।

कई वर्ष बीत गये। ज्यों-ज्यों एक एक वर्ष गुज़रता जाता, त्यों-त्यों शशिकला के सौन्दर्य के बारे में देश-विदेश में खबरें फैलने लगी थीं। यह जानते ही कि वह सोलह साल की हो गई थी, न मालूम कहाँ-कहाँ से राजा और राजकुमार उससे शादी करने आये। परन्तु उनमें से किसी को भी उसने न चुना।

शशिवर्ण ने अपनी लड़की से कहा—"बेटी, तुम्हें पत्नी बनाने के लिए सौ से ऊपर आदमी आये। उनमें से कई बड़े बड़े राजा हैं। कई बड़े सुन्दर हैं। कई पराक्रमी। यदि इनमें से किसी एक को तुमने चुना, तो बाकी कुछ न कहेंगे, परन्तु यदि तुम्हें एक भी न जँचा, तो सब मिल मिलाकर, इसका नामों निशाँ नहीं रहने देंगे। इतने सारे लोगों को गुस्से का मैं कैसे सामना करूँगा? यदि तुमने एक को भी न चुना, मैं किसी एक को चुनकर, उससे तुम्हारा विवाह कर दूँगा। यदि जिसको मैं चुनूँ, वह न जँचा, तो पछताने से कोई फायदा न होगा।"

यह सुन शशिकला घबरायी। "ऐसा मत कीजिए। चाहें तो, जो मुझसे शादी करने आये, एक बाज़ी रखिये। हमारे राजमहल के पासवाले शीशे की पहाड़ पर मैं एक फल लेकर बैठ जाऊँगी। जो घोड़े पर सवार होकर आकर, मेरे हाथ से फल ले लेगा, मैं उसके साथ शादी करूँगी। ठीक है न।"

राजा को भी यह बात जँची। उसके देश में अतिथि के तौर पर आये हुए सब राजाओं को, जो उसकी लड़की से शादी करने आये थे, इस बाज़ी में शामिल होने

के लिए कहा। वे सब इसकी शर्तों को भी मान गये।

एक अच्छा दिन देखकर, बाज़ी की व्यवस्था की गई। शशिकला को पहाड़ की चोटी पर एक सिंहासन पर बिठाया गया। उससे शादी करने के लिए आये हुए बढ़िया कपड़े पहिनकर, बढ़िया घोड़ों पर सवार होकर तलहटी में आ गये। हरेक ने एक के बाद, अपने घोड़े को पहाड़ पर चलाने की कोशिश की। पर एक भी सफल न हो सका। कई घोड़े कुछ दूर गये, फिर यकायक फिसल गये। कई के पैर टूट गये। जो घोड़ों पर सवार थे, उनमें से कई की रीढ़ टूट गई। जब एक एक को घोड़े से गिरते देखा, तो पीछे खड़े लोग हो हल्ला करने लगे।

किले के बाहर भेड़ों को चराते हुए प्रमद्धर ने यह शोर सुना। अब वह सयाना हो चुका था। जैसे और शशिकला से शादी करने के लिए, उत्सुक थे, वह भी था।

"सचमुच मैं राजकुमार हूँ और राजाओं के साथ, मैं भी इस बाज़ी में शामिल हो सकता था। पर इस जंगली बौने के कारण
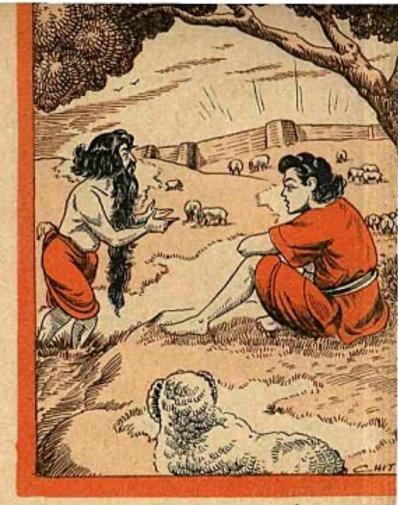
मेरी यह हालत हुई है।" प्रमद्धर ने मन ही मन सोचा।

जब वह यों सोच रहा था, तो बौना जंगली आदमी, जंगल में से उसके लिए आ रहा था। उसने प्रमद्धर को देखकर पूछा—"क्यों यूँ उदास बैठे हो?"

"तुम्हारी बात ही सोच रहा था। तुम्हारे कारण, मैं राजकुमारी के स्वयंवर में भाग नहीं ले पा रहा हूँ।" प्रमद्धर ने कहा।

"किसने कहा है? मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें ज़रूरी पोषाक और घोड़ा
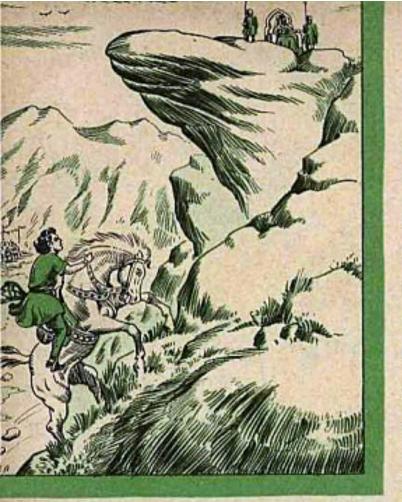
दिलवाऊँगा।" कहकर, बौना उसको जंगल के बीच में एक पहाड़ पर ले गया। वहाँ एक गुफ़ा थी, उसमें उसे ले जाकर, अच्छे कपड़े और चान्दी की जीनवाले घोड़े को दिखाया।

प्रमद्धर पोषाक पहिनकर, घोड़े पर सवार होकर, तेज़ी से किले की ओर निकला। जब वह काँच के पहाड़ के पास गया, तो हर राजा, दस दस बार प्रयत्न करके असफल हो चुका था। जब हर कोई अपने रास्ते जा रहा था, तो एक और राजकुमार को आता देख सबको आश्चर्य हुआ।

प्रमद्धर ने शिशुवर्ण राजा को नमस्कार किया। घोड़े को ऐंडी मारकर, बड़ी तेज़ी से काँच के पहाड़ पर चढ़ने लगा। उसका घोड़ा बाण की तरह, पहाड़ की चोटी पर चला गया। उसके घोड़े पर से उतरते ही राजकुमारी ने सिंहासन से उतरकर, उसे फल दिया। वह उस फल को लेकर, बिना कुछ कहे, घोड़े पर सवार हो और तेज़ी से नीचे उतरा और उसी तेज़ी से किला पार करके चला गया। पहाड़ के नीचे ज़मा हुए लोग तालियाँ बजाने लगे। राजा ने भेरियाँ बजवाकर, यह घोषित कर दिया कि उसकी लड़की से शादी करनेवाला मिल गया था। शशिकला ने भी यह दिखाया कि जिसने बाज़ी जीती थी, उससे वह पूर्णतः सन्तुष्ट थी।

अब विवाह होना ही बाकी था। परन्तु बाज़ी जीतनेवाले ने राजा के पास आकर, अपने कुल और गोत्र के बारे में नहीं बताया था। राजा ने उसके बारे में पूछताछ की, पर उसके बारे में बतानेवाले कोई न था। प्रमद्धर सीधे बौने की गुफ़ा में गया। वहाँ वह पोषाक उतारकर, घोड़े को वहाँ छोड़कर, अपने मामूली गड़रिये के

कपड़े पहिनकर, शाम होते होते अपनी भेड़ों को लेकर, किले में पहुँच गया। राजकुमारी के लिए जो बाज़ी हुई थी, उसमें जीतनेवाला उनको रोज दीखनेवाला गड़रिया था, यह वे अनुमान भी न कर सके। प्रमद्वर ने भी अपने बारे में किसी से कुछ न कहा।

ऐसा लगा जैसे सारी बाज़ी बेकार हो गई हो। राजा को न सूझा कि क्या करे। उसने आज्ञा दी कि राज्य के सब युवक आकर, राजमहल के सामने उपस्थित हों। इस आज्ञा के अनुसार, राज्य के गरीब और भिखारी युवक भी आये। राजकुमारी ने उनमें से हरेक को गौर से देखा। जिसने उससे फल लिया था, वह उनमें न था।

यह देख, राजा ने राजकुमारी को अपने सैनिक, सेवक और नौकरों को भी देखने के लिए कहा। आखिर गड़रिये रह गये। राजकुमारी ने उन्हें देखा और प्रमद्वर को देखते ही चिल्लायी—"यही है, यही है।"

बाकी सब नौकर हँसे। राजा ने सोचा कि उसकी लड़की पगली हो गई थी। परन्तु शशिकला ने साफ साफ कहा कि वह भेड़ें चरानेवाला ही पहाड़ पर चढ़ा था।

राजा ने जब प्रमद्वर को अपने पास बुलाकर पूछताछ की, तो उसने अपनी सारी कहानी साफ साफ सुना दी। जब राजा को यह मालूम हुआ कि जिसको उसकी लड़की ने चुना था, वह राजकुमार ही था, तो उसके दिल का भार हल्का हुआ। उसने उत्तान राजा के पास यह शुभवार्ता भिजवायी। प्रमद्वर के माँ-बाप को बुलवाया और अपनी लड़की का बड़े वैभव से विवाह करवाया।

वाक्सिद्धि

किसी गाँव में वेदोपाध्याय नाम का एक ब्राह्मण पुरोहित था। पुरोहिताई से उसका ठीक गुज़ारा नहीं होता था। किसी ने उसकी जन्मकुण्डली देखकर बताया कि विवाह करने के बाद, उसका भाग्य कुछ अच्छा रहेगा।

उनकी बातों का विश्वास करके, यद्यपि वह पत्नी का भरण-पोषण नहीं कर सकता था, उसने गंगा नाम की गरीब घर की लड़की से विवाह कर लिया।

यह बात सच थी कि विवाह के बाद, पुरोहिताई से उसकी आमदनी बढ़ गई, पर अब एक की जगह दो पेट भी थे। इसलिए उसकी गरीबी कम न हुई। उसने फिर एक बार अपनी कुण्डली ज्योतिषियों को दिखाई। उनसे पूछा कि उसका भविष्य अच्छा था कि नहीं। ज्योतिषियों ने कहा कि पुत्र पैदा होने के बाद, अच्छे दिन आयेंगे।

थोड़े दिनों बाद गंगा, गर्भवती हुई और एक लड़के को उसने जन्म दिया। वेदोपाध्याय को उसके जन्म के दिन ही, अच्छा संस्कार मिला। उसने उसका नाम सिद्धवेदी रखा और इस आशा में रहने लगा कि उसके भी अच्छे दिन आयेंगे।

सिद्धवेदी के पैदा होने के बाद, वेदोपाध्याय पुरोहिताई से कुछ और ज्यादह कमाने लगा। परन्तु उसके साथ उतने खर्च भी होने लगे। इसलिए उसे ऐसा मान न हुआ, जैसे उसके जीवन में कोई नई अवस्था आ गई हो।

वेदोपाध्याय को जन्मकुण्डली में ही नहीं, सभी प्रकार के ज्योतिष में विश्वास

बाबूराम

था। प्रश्न और शुकुनों में भी विश्वास था। सिद्धवेदी जब थोड़ा थोड़ा बोलने लगा था, तभी उसके पिता ने उसके पास आकर पूछा—"रहेगी, या जायेगी?"

"जायेगी।" सिद्धवेदी ने कहा।

गंगा अपने पति के अन्धविश्वास जानती थी। इसलिए बच्चे का कहा—"जायेगी।" सुनकर न मालूम उनको कितना गुस्सा आये, वह घबरायी, चूँकि यदि कोई उसके मन को चुभानेवाली बात कहता, तो वह आगबबूला हो उठता।

परन्तु इस बार अपने लड़के की बात सुनकर, वह बड़ा खुश हुआ। "वाह बेटे! जो तुम्हारे मुख से निकला है वही होगा।"

गंगा ने सम्भलकर पति से पूछा—"आपने क्या पूछा था और उसने क्या कहा था?"

"क्या हमारी गरीबी यों रहेगी? या कभी जायेगी?" मैंने लड़के से पूछा। उसने बिना झिझके कहा—"जायेगी।" वेदोपाध्याय ने कहा।
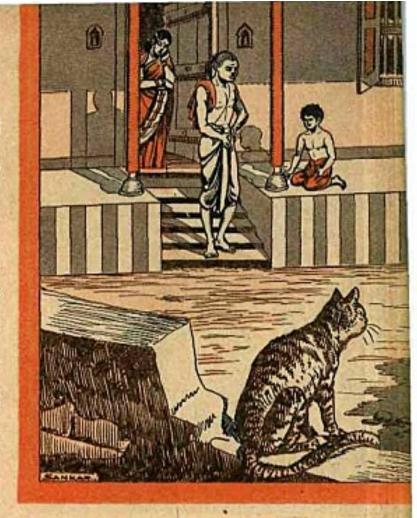
इसके बाद वह अपने लड़के को और ध्यान से देखने लगा। उसे सन्देह हुआ कि जो मुख से निकलता है, वह होता है कि नहीं, उसने तरह तरह से उसकी परीक्षा ली।

उसे एक बार नंगी दीवार पर, एक बिल्ली बैठी दिखाई दी। वेदोपाध्याय ने अपने लड़के को वह बिल्ली दिखाकर पूछा—"सिद्ध! वह हमारी तरफ़ कूदेगी, या परली तरफ़?"

"हमारी ओर ही कूदेगी।" लड़के ने कहा। कुछ देर बाद, बिल्ली उन्हीं की ओर कूदी।

छोटी छोटी बातों पर, सिद्धवेदी जो कुछ कहता वैसे ही होता। वेदोपाध्याय

"परसौं दुपहर को मर जायेगी।" सिद्धवेदी ने कहा, जैसा कि उसने कहा था, वैसे ही, उसी समय वह मर गई।

सब लोग जान गये कि सिद्ध में वाक्सिद्धि थी, कई उससे कुछ पूछते भी डरते थे। चूँकि वह बुरा कहे या भला, वह होकर रहता था।

तब भी उससे प्रश्न करने लोग आते ही रहते। खासकर वे लोग जिनके यहाँ चोरी होती, या जानवर खो जाते, प्रश्न किया करते। इस तरह जिनका यूँ फायदा होता, वे यथाशक्ति उसको उपहार दिया करते।

सिद्धवेदी की बात कानों कान राजा तक भी पहुँची। राजा ने पहिले यह सोच कि लोग बात का यूँ बतँगड़ बना देते हैं, कुछ परवाह न की, पर जब उसे मालूम हुआ कि उसके मन्त्रियों को भी उस पर विश्वास हो गया था, उसने उनके विश्वास को गलत साबित करने का निश्चय किया।

एक दिन राजा के सैनिकों ने वेदोपाध्याय के घर आकर कहा—"राजा की आज्ञा है कि आप और आपके लड़के,

जान गया कि उसका लड़का वाक्सिद्धि के साथ पैदा हुआ था। वह इस पर खुश तो हुआ ही, वह औरों से भी कहा करता—"मेरा लड़का वाक्सिद्धिवाला है, जो कुछ वह कहता है, वह होकर रहता है। चाहें तो आप स्वयं देख लें।"

अड़ोस पड़ोस के लोगों ने यह जानने के लिए वाक्सिद्धि क्या होती है, तरह तरह के प्रश्न किये। पर जो कुछ वह कहता वह होकर रहता। एक दिन एक ने पूछा—"अरे सिद्ध, मेरी माँ बीमार है, क्या वह ठीक हो जायेगी?"

राज-दरबार में हाज़िर हों।" पिता यह सोच खुश हुआ कि राजा शायद उसके लड़के का सम्मान करने जा रहे थे।

जब वे दरबार में आ रहे थे, उसी समय राजा सभा में आये। सिंहासन के पास गये बग़ैर ही, सिद्धवेदी के बारे में पूछा। उस लड़के को पास बुलाकर, कहा—"सुना है, तुम में वाक्सिद्धि है। मैं तुमसे तीन प्रश्न करूँगा। उनका उत्तर तुम कागज़ पर लिखो। उन्हें दरबार के सामने पढ़कर सुनाऊँगा।"

सिद्धवेदी को कागज़ और कलम दी गई।

"पहिला प्रश्न—मैं इस समय सिंहासन पर दायीं तरफ से बैठूँगा या बायीं तरफ से? या सामने से? इनका उत्तर दो।" राजा ने कहा।

सिद्धवेदी ने उन प्रश्नों का उत्तर लिख कर राजा की ओर देखा।

"उत्तर लिख दिये हों, तो मेरे साथ बाग में आओ।" कहकर, राजा ने सिंहासन पर बैठने का ख्याल छोड़, बाहर जाते हुए कागज़ खोलकर पढ़ा।

यह जानते ही कि राजा, उसके लड़के की परीक्षा ले रहा था, वेदोपाध्याय पसीना पसीना हो गया। परन्तु सिद्धवेदी का उत्तर ठीक ही था। "राजा, अब सिंहासन पर बैठेंगे की नहीं।" राजा यह उत्तर पढ़कर सन्तुष्ट हुआ।
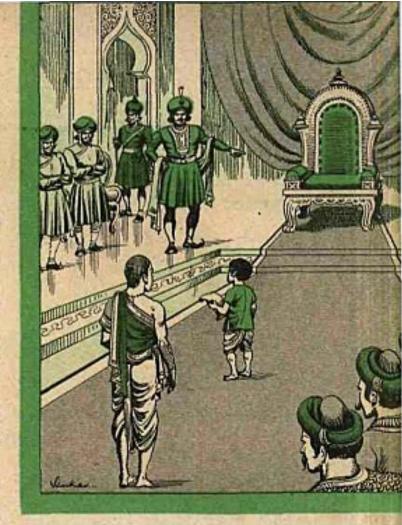
बाग में एक नारियल के पेड़ पर बड़े छोटे बहुत-से नारियल थे। उनमें से एक पके नारियल को दिखाकर, राजा ने सिद्धवेदी से पूछा—"यह नारियल कब पकेगा? यह कहाँ गिरेगा?"

"एक क्षण में, यहीं...." सिद्धवेदी ने नारियल के नीचे लकीर खींचकर जगह बतायी।

तुरत राजा ने अपने बागवान को बुलाकर कहा—"अरे, तुम फौरन पेड़ पर चढ़कर, नारियल तोड़कर, उतर आओ।"

परन्तु उस समय, जो आदमी वहाँ आया, उसे पेड़ पर चढ़ना न आता था। जब वह सीढ़ी लाया, तो इस बीच एक क्षण हो ही गया। वह नारियल जो गिरनेवाला था, उसका हाथ लगते ही गिर पड़ा और उसी जगह गिरा, जहाँ सिद्धवेदी ने लकीर खींची थी।

"एक और प्रश्न। मैं अभी किले के बाहर जाकर, फिर अन्दर आनेवाला हूँ। यह लिखकर बताओ कि मैं किस द्वार से बाहर जाऊँगा और किस द्वार से अन्दर आऊँगा, मैं वापिस आकर तुम्हारा उत्तर देखूँगा।" राजा ने सिद्धवेदी की वाक्सिद्धि पर अचरज़ करते हुए कहा।

तुरत सिद्धवेदी ने कागज़ पर उत्तर लिख दिया। उसके लिखने के बाद, राजा ने किले की दीवार पर सीढ़ी रखवाई। उस पर चढ़ा, फिर परली तरफ सीढ़ी रख कर, जब वह उतर रहा था, तो उसका पैर फिसला और नीचे गिर पड़ा। तुरत सैनिक पास के द्वार से उसको अन्दर ले गये।

राजा ने अपने चोट की परवाह न की। सिद्धवेदी के उत्तर को लेकर, उसने यूँ पढ़ा—"राजा किसी भी द्वार से बाहर नहीं जायेंगे। इस पास के द्वार से अन्दर आ जायेंगे।"

राजा को भी सिद्धवेदी की वाक्सिद्धि पर पूरा विश्वास हो गया। उसने उस लड़के को बहुत-सा धन दिया और एक जागीर भी ईनाम दी।

तूफान
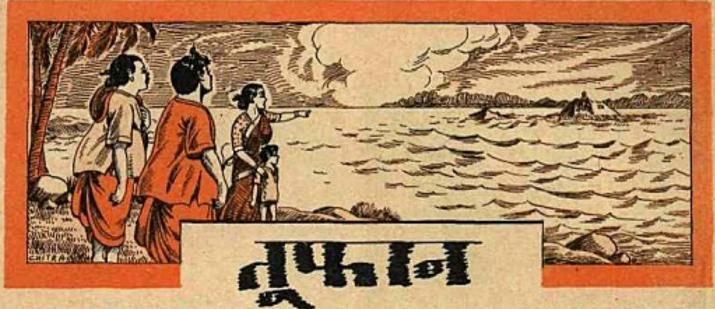
पन्नालाल जिस प्रान्त में रहता था, उस साल वहाँ बड़ी जबर्दस्त बाढ़ आयी और नदी के आस-पास की भूमि जलमग्न हो गई।

पन्नालाल की गली में रहनेवाले वीरलाल ने आकर कहा—"यह क्या पन्नालाल? तुम तो हर किसी की मदद किया करते थे और अब जब कि लोग रो धो रहे हैं, उनकी सहायता के लिए न जाकर, आराम से घर में बैठे हो। सुनते हैं गाँव डूब गये हैं और लोग जान बचाकर, ऊँची जगह आ गये हैं। मैंने सोचा था कि तुम वहाँ गये हुए होगे।"

"यदि गाँव के गाँव डूब गये हैं, तो मैं अकेला जाकर क्या सहायता कर सकता हूँ वीरलाल?" पन्नालाल ने कहा।

"यही है तुम्हारा परोपकार? चलो चलें। किसी एक दो की तो भरपूर सहायता करें।" वीरलाल ने कहा।

दोनों मिलकर बाढ़ ग्रस्त एक गाँव में गये। वह गाँव पानी में द्वीप की तरह लग रहा था। उस गाँववाले नावों में समान लादकर ऊँची जगह जा रहे थे।

गाँव से बाहर आकर, जो ऊँची ज़मीन पर आ गये थे, उनमें भी बड़ी हाय-तोबा मची हुई थी। उनमें से एक स्त्री और बच्चे पन्नालाल को दिखाई दिये। वे, जो कोई उन्हें दिखाई देता, उसे बुला रहे थे। पर कोई उनकी बात नहीं सुन रहा था। पन्नालाल और वीरलाल ने उनके पास जाकर कहा—"तुम्हें क्या कष्ट है?"
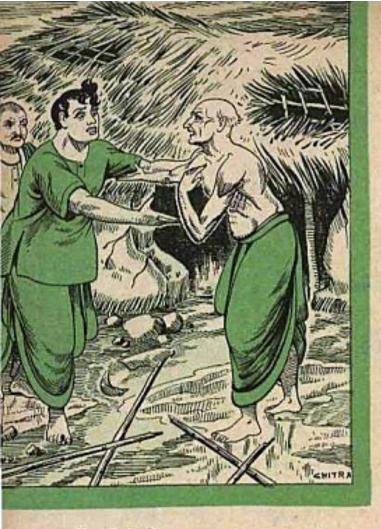
"वे देखिये, वह जो घर की छत दिखाई दे रही है, उसमें हमारा बाबा फँस गया है। कल रात जब वर्षा शुरु हुई, हमें तो उसने पहिले भेज दिया और मुख्य समान लाने के लिए स्वयं पीछे रह गया। इतने में नदी में बाढ़ आ गई। बाबा घर की छत पर पहुँच गया। यदि घर ढ़ह गया, तो बाबा खतरे में पड़ जायेगा। हम नाव भी नहीं भेज सकते क्योंकि हमारे पास कानी कौड़ी भी नहीं है। आप मेहरबानी करके एक नाव भेजकर हमारे बाबा को यहाँ पहुँचा दीजिये। चीज़ें डूबती हैं, तो डूबने दीजिये। भीख माँगकर ही कहीं जी लेंगे।"

यह सुनते ही पन्नालाल नावों की ओर भागा। वीरलाल पीछे रह गया। उसने उस स्त्री से पूछा—"बिना पैसे के कौन नाव देगा? उनके लिए भी तो कुछ कमाने का यही समय है न? तुम अपना नथ दो, मैं अभी नाव तय किये देता हूँ।"

उस स्त्री ने अपना नथ निकालकर उसे दे दिया, उसे वीरलाल ने अपनी जेब में डाल लिया। इस बीच पन्नालाल ने अपनी अंगूठी देकर, एक नाव तय की। उसमें पन्नालाल और वीरलाल सवार होकर उस जगह गये, जहाँ बूढ़ा छत पर फँस गया था। पर तब तक बाढ़ का पानी काफ़ी हट गया था।

पन्नालाल और वीरलाल ने जैसे तैसे छत पर से बूढ़े को उतारा। पर उसने कहा कि वह घर छोड़कर नहीं आयेगा, चूँकि उसका सब कुछ उस घर में ही रखा था।

"हम तुम्हारी चीज़ें कहीं न जाने देंगे। पहिले तुम जाकर अपने लोगों से मिलो।" कहकर पन्नालाल ने बूढ़े को नाव पर सवार कराया और ऊँची जगह ले गया, जहाँ वह स्त्री और बच्चे थे।

पन्नालाल नाव में फिर वापिस गया। उसमें सारा समान लादकर, समान के साथ वीरलाल को किनारे भेजा। फिर नाववाले ने पन्नालाल को भी किनारे पहुँचा दिया और वह अपनी नाव लेकर चल गया।

बूढ़ा अपना समान इस तरह देखने लगा, जैसे कोई चीज़ खोज रहा हो, यह देख वीरलाल ने कहा—"अगर एक दो चीज़ें रह भी गई हों, तो बाद में देखी जा सकती हैं। अन्धेरा हो रहा है, आओ चलें।"

"फिर उनके भोजन के बारे में क्या करोगे?" पन्नालाल ने पूछा।

"हमारे पास रोटियाँ हैं, हम अपनी बात देखलेंगे।" उस स्त्री ने कहा। पन्नालाल, वीरलाल के साथ चल दिया। वे कुछ दूर जाकर, मुड़े ही थे कि वीरलाल ने पानी के किनारे के एक पौधे में से, ताम्बे का लोटा निकला।

"देखो पन्नालाल, यह लोटा पानी में बहता मुझे मिला है। इसमें जो कुछ पैसा है, उसका आधा तुम लो और आधा मुझे दो।"

"लोटे के मुँह पर सीसे की सील लगी है।" पन्नालाल ने उसे लेकर, देखकर कहा—"कहीं वह उस बूढ़े का तो नहीं है? शायद वह इस ही खोज रहा था। चलो उनसे पूछ आयें।" वह पीछे मुड़ा।
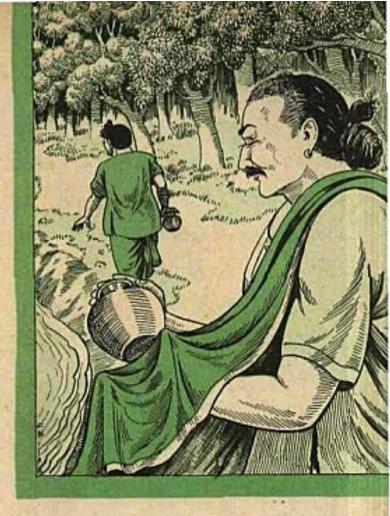
वीरलाल उबल पड़ा। उसे सन्देह था कि पन्नालाल यह करेगा, इसलिए ही उसने पौधे में से दूसरा लोटा नहीं निकाला था। "खैर, पन्नालाल के भाग में यह नहीं है।" उसने दूसरा लोटा निकाला। अपने अंगोछे में लपेटा और सीधे घर की ओर चल पड़ा।

वीरलाल कुछ दूर ही गया था कि किसी ने उसे रोका। चाकू दिखाया—"जो कुछ तुम्हारे पास है, वह दे दो।" कहकर उसने अंगोछे में छुपाये हुए लोटा ले लिया।

उसने भी लोटे पर सील देखकर, सोचा कि उसमें कोई खज़ाना था। जब उसने अपने चाकू से सील में छेद किये, तो देखा कि उसमें रंग-बिरंगी रेत, छोटी-छोटी कौड़ियाँ थीं। उन्हें देखकर, उसे गुस्सा आया और उस लोटे को उसने वीरलाल के सिर पर फेंका। वीरलाल को वह लगा और वह चिल्लाकर नीचे गिर गया। वह उसकी अंगूठी और रुपये लेकर चलता हुआ।

उधर पन्नालाल के लाये हुए लोटे को देखकर, बूढ़े के जान में जान आयी। "यह लोटा, हमें पानी में मिला था।"

"तुमने हमारे घर की रक्षा की, बेटा। मेरा लड़का कहीं परदेश में है। घर बहुत पुराना है। नया घर बनाने के लिए मैंने इस लोटे में रुपये और गहने रख रखे थे। तूफ़ान को आता देख, मैं डर गया, कल ही मैंने इस पर सील लगवायी थी—बड़ा अच्छा हुआ कि यह मिल गया। इसी तरह का एक और लोटा था, उसमें कन्याकुमारी से लायी हुई रंग-बिरंगी रेत, शंख, सीप आदि थे। वह मेरा पूजा का लोटा था।" बूढ़े ने कहा।

पन्नालाल जब उनको छोड़कर वापिस जा रहा था, तो रास्ते में वीरलाल दिखाई दिया। वह उठकर, सिर पकड़कर कराह रहा था। उसके पास लोटा था।

"यह लोटा भी बूढ़े का है।" जब पन्नालाल उसे उठाने के लिए झुका, तो उसको वह नथ भी मिला, जो चोर के हाथ से फिसल गया था। पन्नालाल ने उन्हें ले जाकर बूढ़े को दिया। फिर वीरलाल को मरहम पट्टी करवायी। शाम होते होते वे घर पहुँच गये।
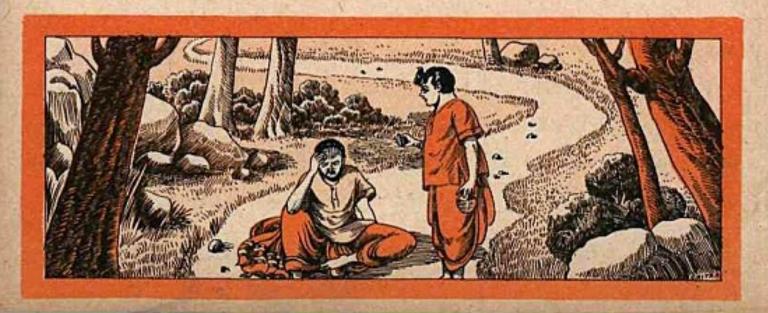
जाम्बवन्त की प्रेरणा पर, हनुमान वायुवेग से, आकाश मार्ग से, हिमालय पर्वत गया। वहाँ उसने बर्फ से ढ़की चोटियाँ, गुफ़ायें, ब्रह्म कोश, कैलाश, हयग्रीव, ब्रह्म कपाल, कुबेर स्थल, पाताल रन्ध्र, काँचनशृंग और रात में प्रकाश देनेवाले सर्वोषधि प्रान्त देखा। उस पर उतरकर, वह औषधियाँ देखने लगा। यह देखकर दिव्य औषधियाँ अन्तर्धान हो गयीं।

हनुमान को बड़ा गुस्सा आया। उसने ज़ोर से चिल्लाकर पर्वत से कहा—"क्या तुमने निश्चय कर लिया है कि तुम राम पर दया नहीं करोगे? मैं तुम्हें अपने हाथों से चूरा-चूरा कर दूँगा।" यह कहकर हनुमान उस पर्वत को उठाकर, आकाश मार्ग से चला गया।

हनुमान को पर्वत के साथ आता देख, वानर ज़ोर से चिल्लाये। हनुमान भी काम पूरा होने के कारण खुशी में ज़ोर से चिल्लाया। उसके चिल्लाने को सुन, राक्षस भी डर से खूब चिल्लाये।

हनुमान औषधी पर्वत के साथ, त्रिकूट पर्वत पर, वानर सेना के बीच मँडराया। उसने प्रमुख वानरों को नमस्कार किया और विभीषण को गले लगा लिया। उसकी प्रसन्नता की सीमा न थी।

रावण युद्ध के लिए नहीं आयेगा। हम में से बलवान, वेगवान वानरों को मशालें लेकर, लंका पर हमला करना होगा।"

सूर्यास्त के बाद, भयंकर रात्रि के आते ही वानर वीर मशालें लेकर, लंका की ओर गये। उनके हमले से डरकर, द्वार रक्षक राक्षस भाग गये।

चूँकि उनको कोई रोकनेवाला नहीं था, वानर नगर में जा घुसे, द्वार, बुर्ज, राजवीथि व अन्य वीथियों को उन्होंने जला दिया।

लंका सब जलने लगी। गगनचुम्बी महल जल जलकर खाक हो गये। घरों के साथ बहुमूल्य वस्तु, वस्त्र, रत्न, कम्बल, जेवर, जगहरात अस्त्र-शस्त्र, कवच, सब जल जला गये। कई राक्षस जल गये।

राक्षस स्त्रियों ने हाहाकार किया। घोड़े और हाथी खुल गये और इधर उधर भागने लगे। जलती लंका का प्रतिबिम्ब समुद्र पर पड़कर, वह भी लाल दिखाई देने लगा।

एक तरफ वानर सन्तोष से और राक्षस दुःख से चिल्ला रहे थे। पर इन दोनों के चिल्लाने से अधिक, शोर राम के बाण कर

राम, लक्ष्मण और बाकी वानर वीर, दिव्य औषधियों के सुगन्ध से ही बाणों का दर्द भूल गये।

युद्ध में जो वानर मारे गये थे, वे दिव्य औषधी की हवा पाकर, इस तरह उठ खड़े हुए, जैसे नींद से उठे हों।

वानरों ने युद्ध में मरे राक्षसों को उठाकर, समुद्र में फेंक दिया। हनुमान ने औषधी पर्वत को ले जाकर, फिर यथा स्थान रख दिया।

तब सुग्रीव ने हनुमान से कहा—"भाई कुम्भकर्ण और लड़के मर गये हैं। इसलिए

रहे थे। यह सुन, राक्षस युद्ध के लिए तैय्यार हो गये।

सुग्रीव ने वानरोत्तमों को आज्ञा दी कि वे रावण के अन्तःपुर के द्वार पर जाकर, युद्ध करें। रावण, वानरों को मशालें लेकर अन्तःपुर के द्वार पर देख उबला। उसने उन वानरों को मारने के लिए निकुम्भ और कुम्भ को भेजा और कुम्भकर्ण के लड़कों को भेजा। वे बहुत-से राक्षस वीरों को साथ लेकर निकल पड़े।

वानरों और राक्षसों का तीव्र युद्ध हुआ। कई राक्षस वीर मारे गये। अंगद मूर्छित हो गया। आखिर कुम्भ, सुग्रीव के हाथ मारा गया। उसके भाई निकुम्भ को हनुमान ने मार दिया। कुम्भ और निकुम्भ के मरते ही वानरों ने जयजयकार किया। राक्षस भयभीत हो गये।

फिर रावण ने, वानरों से युद्ध करने के लिए खर के लड़के मकराक्ष को भेजा। मकराक्ष, राक्षस सेना को लेकर, राम लक्ष्मण से युद्ध करने के लिए निकला। राक्षसों के बाणों से जब वानर घबराकर भागने लगे, तो राम ने अपने बाणों से, उन राक्षसों को रोक दिया, जो वानरों
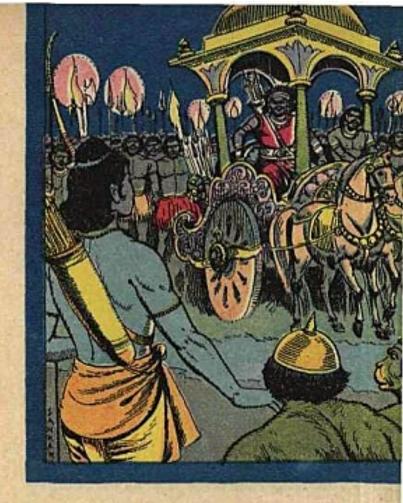
को खदेड़ रहे थे। मकराक्ष ने डींग मारी कि पिता को मारने का बदला, वह अवश्य राम से लेगा।

"बातों से विजय नहीं मिलेगी, युद्ध करो।" राम ने कहा। दोनों ने मिलकर भयंकर युद्ध किया। मकराक्ष को आखिर, अपने सारथी, घोड़े और रथ खोने पड़े। आखिर, वह आग्नेयास्त्र से मारा गया। उसके साथ के राक्षस सब नगर में भाग गये।

मकराक्ष की मृत्यु की वार्ता सुनकर, रावण ने गुस्से में दान्त पीसते हुए, अपने
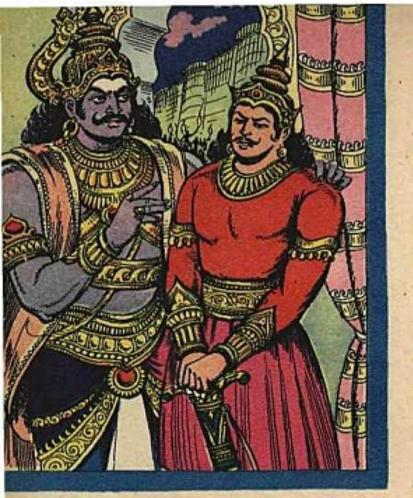
लड़के इन्द्रजित को बुलाकर कहा—"बेटा, दृश्य होकर या अदृश्य होकर, राम, लक्ष्मण से युद्ध करके उनको मारकर आओ—तुमने तो इन्द्र को भी जीत रखा है, इन मनुष्यों की क्या औकात है ?"

इन्द्रजित ने पिता की आज्ञा पाकर, हवन करके, एक काली बकरी की बलि दी। होमकुण्ड की अग्नि ने अच्छी तरह जलकर विजय की सूचना दी। इन्द्रजित अपने अदृश्य रथ पर सवार हुआ, युद्धभूमि में गया। वानर सेना में राम, लक्ष्मण को पहिचाना, उन पर बाणों की वर्षा करने लगा। राम, लक्ष्मण यह न जान सके कि इन्द्रजित आकाश में कहाँ था, उन्होंने सारे आकाश को बाण और दिव्यास्त्र से भर दिया। पर उनमें से एक भी इन्द्रजित को नहीं लगा।

यह देखकर कि इन्द्रजित के बाण किस तरफ से आ रहे थे। राम, लक्ष्मण ने अपने बाण उस तरफ छोड़े। चूँकि इन्द्रजित सारे आकाश में विचर रहा था, इसलिए उनके बाण उसको नहीं लगे।

इन्द्रजित के बाणों के कारण, राम लक्ष्मण के शरीर लहूलुहान हो गये। वानरों के झुन्ड के झुन्ड मारे गये। लक्ष्मण को गुस्सा आ गया। उसने कहा—"ब्रह्मास्त्र का उपयोग करके मैं सब राक्षसों को मार दूँगा ?"

"एक के लिए, हमसे युद्ध करनेवाले सबको मार देना अच्छा नहीं है। यदि चाहते हो, तो अकेले इन्द्रजित को मार दो।" राम ने कहा।

इतने में इन्द्रजित ने एक चाल सोची। उसने एक माया की सीता बनवायी, उसे रथ में रखा, वानरों के सामने उसको मार दिया। राम, लक्ष्मण का
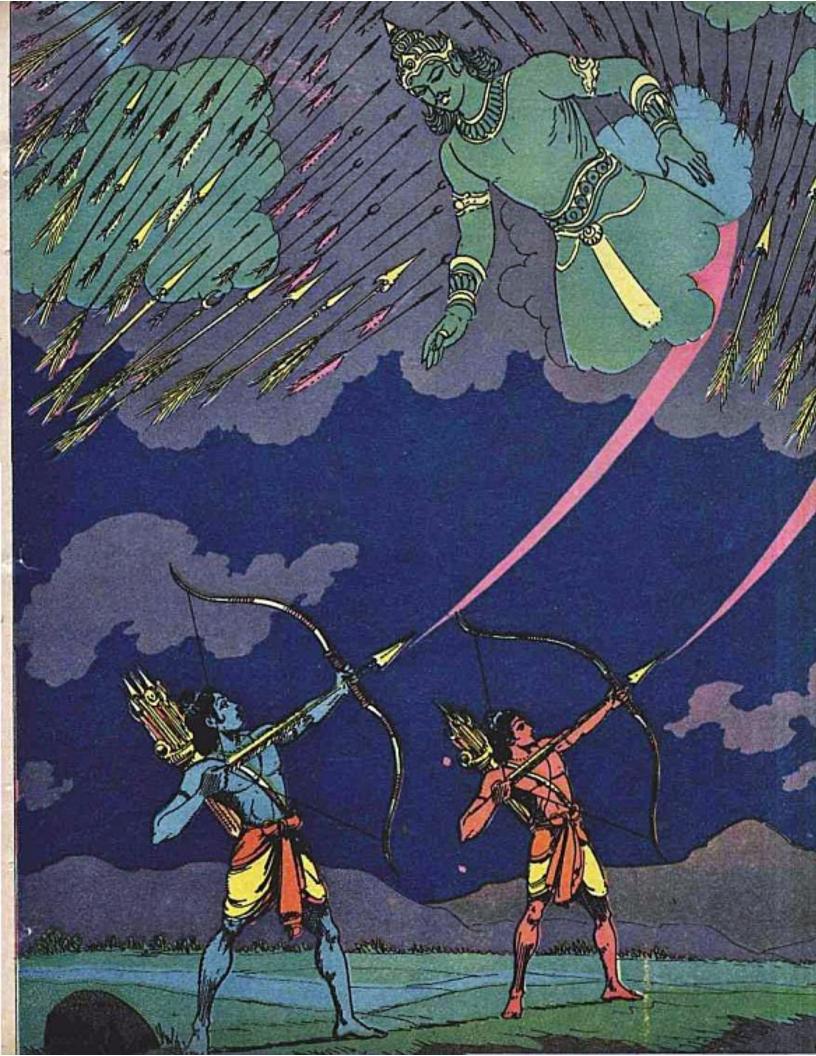
मन दुखाने के लिए, वह वानरों के सामने आया।

इन्द्रजित के दीखते ही वानर उत्साह में चिल्लाने लगे। हनुमान एक बड़ा पर्वत लेकर, वानरों के सामने खड़ा हो गया।

इतने में हनुमान को इन्द्रजित के रथ में सीता दिखाई दी। उसके कपड़े मैले थे। धूलधूसरित दीन मुँह था, ठीक वैसा ही, जैसा कि उसने कुछ दिन पहिले देखा था। सीता को, इन्द्रजित के रथ में देख, हनुमान को बड़ा दुःख हुआ। वह आस पासवालों से पूछ ही रहा था कि किस मतलब से, इन्द्रजित सीता को उस प्रकार ला रहा था। उसने देखा कि इन्द्रजित माया सीता की वेणी पकड़कर तलवार से मारा। वह "राम....राम" कहती रोयी।

हनुमान इन्द्रजित के सामने गया। उसे बुरी तरह डाँटा फटकारा। "इस सीता ने तेरा क्या बिगाड़ा है? उसे क्यों मार रहे हो?"

"इस सीता के कारण ही तो, सुग्रीव और राम इस लंका में आये हैं। इसे अभी मारकर, उसके बाद राम, लक्ष्मण और तुम्हें और सुग्रीव को मारकर, विश्वासघाती विभीषण को भी मार दूँगा।" इन्द्रजित ने कहा। तुरत उसने अपनी तलवार से, माया सीता को मार दिया। "तुम्हारे सामने ही सीता को मार दिया है। अब तुम्हारे सामने सब प्रयत्न व्यर्थ है।" कहकर, इन्द्रजित ने सिंहनाद किया। वानर डरकर भाग गये।

तब हनुमान ने उनसे पूछा—"कहाँ भागे जा रहे हो? तुम्हारा पराक्रम क्या हुआ? मैं आगे चलता हूँ? मेरे साथ आओ।" कहकर, उसने युद्ध के लिए

सबको उत्साहित किया। सबने मिलकर राक्षसों पर आक्रमण किया और उनको वे मारने लगे।

हनुमान ने दुःख और कोप से तपते हुए, एक बड़ी शिला इन्द्रजित पर फेंकी। पर वह उसे लगी नहीं। फिर भी, इससे वानरों में जोश आ गया और वे राक्षसों पर उत्साह से हमला करने लगे।

हनुमान ने साथ के वानरों से कहा—"हम जिस सीता के लिए आये हैं, जिनके लिए हम युद्ध में प्राण न्योछावर कर रहे हैं, वह मार दी गई है। राम, लक्ष्मण और सुग्रीव को बताओ कि इन्द्रजित ने सीता को मार दिया है, फिर जैसी वे आज्ञा देंगे, वैसा करेंगे।" वानर सब पीछे चले गये। उनके चले जाने पर, इन्द्रजित होम करने के लिए निकुम्भिक चैत्य गया।

इस बीच राम को पश्चिम द्वार पर युद्ध का कोलाहल सुनाई दिया। उन्होंने जाम्बवन्त से कहा—"हमारा हनुमान, लगता है राक्षसों से भयंकर युद्ध कर रहा है। जाकर उसकी सहायता करो। जाम्बवन्त जब पश्चिम द्वार की ओर जा रहा था, तो उसको रास्ते में हनुमान और वानर वीर आते हुए दिखाई दिये।

हनुमान ने युद्ध के लिए निकलती हुई भल्लूक सेना को वापिस जाने के लिए कहा। फिर जल्दी ही राम के पास गया। उनसे उसने कहा कि इन्द्रजित ने सीता को मार दिया था।

यह सुनते ही राम पेड़ की तरह गिर गये। दूर दूर से वानर भागे भागे आये। राम के मुँह पर पानी छिड़का। लक्ष्मण ने राम को सहलाया। राम

लक्ष्मण की गोदी में सिर रखकर, बड़े दुखी हुए।

इतने में वहाँ विभीषण अपने चारों मन्त्रियों के साथ आया। "सब दुखी मालूम होते हैं, क्या कारण है?"

"हनुमान ने जबसे आकर बताया है कि इन्द्रजित ने सीता को मार दिया है, तब से ये यूँ दुखी हैं।" लक्ष्मण ने विभीषण से कहा।

"ये सब गलत बातें हैं। रावण, सीता के साथ कभी ऐसा न होने देगा। जिसने मेरे कहने पर भी सीता को राम को देने के लिए नहीं माना। क्या वह सीता को मरवायेगा? इन्द्रजित तो सीता को देख भी नहीं सकता है। क्या वह उसे लेकर मार सकेगा? अब रावण के पास सिवाय इन्द्रजित के और कोई रह भी नहीं गया है। इन्द्रजित अब विजय के लिए होम करने के लिए निकुम्भिक जा रहा है। इस बीच वानर उसका यज्ञ भंग न कर दें इसलिए कोई माया करके गया है और उसकी माया चल भी गई और आप सब इतने दुखी हो और उधर वह निर्विघ्न होम पूरा कर रहा है। इसके बाद देवता और दानव यदि एक होकर भी आयें, तब भी उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। इसलिए मेरा यह कहना है कि उसके यज्ञ पूरा करने से पहिले हम निकुम्भिक चलें। राम, आप बिना दुख किये, यहाँ रहो, लक्ष्मण को मेरे साथ भेजो। वह इन्द्रजित को मार सकेगा। अब हमें बिना कुछ देरी किये, जाना होगा।" विभीषण ने कहा।

रुक्मांगद

[२]

मोहिनी के साथ, जब रुक्मांगद अपने नगर वापिस आ रहा था, तो घोड़े के पैर के नीचे एक गो कुचल गई। रुक्मांगद ने पानी छिड़क कर, उसके प्राण बचाये। तब उसने रुक्मांगद से इस प्रकार कहा—"राजा, मैं शाख नगर में एक ब्राह्मण की पत्नी हूँ। मेरा पति सबके साथ तो बड़ा मीठा व्यवहार करता, पर मुझे देखकर उबल पड़ता। मुझे यह देख बड़ा बुरा लगता। जब मैंने साथ की स्त्रियों से कहा, तो उन्होंने कहा कि वे दवा आदि से बश में आ जायेंगे। उस तरह की दवा देनीवाली एक योगिनी थी। मैंने उसको अपनी अंगूठी दी और कोई चूर्णवाली तावीज़ लाकर, मैंने अपने पति के गले में डाली। तब से मेरा पति क्षय से कष्ट उठाने लगा। उस बीमारी ने उसे खा सा लिया। उसने कहा—"मुझे बचाओ, मैं तुम्हारा दास होकर रहूँगा। मैं योगिनी के पास गयी और जो कुछ गुज़रा था, उसे सुनाया और कहा कि मेरे पति की बीमारी हटा दे। योगिनी ने जड़ दी, उससे मेरा पति ठीक हो गया और मेरी बात मानने लगा। इस तरह के पाप करने के कारण, मैंने कितने ही नरक कष्ट झेले। आखिर मैंने यह गो जन्म लिया। इसलिए श्रावण द्वादशी के व्रत का पालन करके, जो पुण्य पाया है, वह मुझे देकर, मेरी रक्षा करो।"

यह सुन मोहिनी ने कहा—"जिसने जो पाप-पुण्य किया है, उसका फल भुगतना
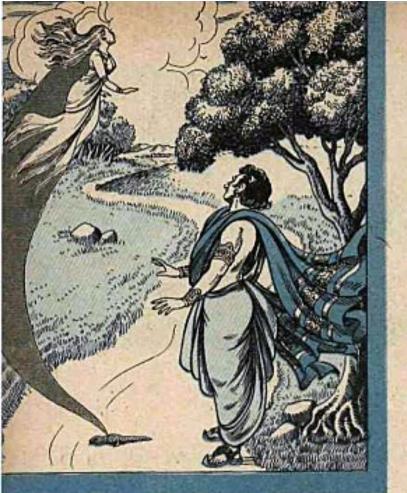
ही होगा। यदि इसकी रक्षा की गयी, तो साँप को दूध पिलाकर, उसका विष बढ़ाने के समान होगा। चलो, चलें।"

"मोहिनी, तुम्हारी बात ठीक नहीं है। परोपकार सदा अच्छा है।" कहते हुए रुक्मांगद ने अपना पुण्य गो को दे दिया। तुरत उस गो में से, एक दिव्य स्त्री का रूप निकला और वैकुण्ठ चला गया।

फिर रुक्मांगद, मोहिनी के साथ अपने नगर पहुँचा और सबसे मिलकर, बड़ा खुश हुआ। उसे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि धर्मांगद बड़ी खुशी से राज्य चला रहा था। अपने पिता की नयी व्याही हुई मोहिनी से, धर्मांगद ने ठीक व्यवहार ही न किया बल्कि, उसने इस कारण हुए माँ के दुःख को भी शान्त किया।

धर्मांगद के व्यवहार से मोहिनी को आश्चर्य हुआ। उसे, उस जैसे व्यक्ति को धोखा देने का कभी ख्याल भी आता, तो बड़ा क्लेश होता। रुक्मांगद की और पत्नियों को भी उससे क्रोध था, उनको भी धर्मांगद ने शान्त किया।

यह सोच कि कहीं नाराज़ न हो जाये रुक्मांगद, सन्ध्यावली की ओर देख भी न रहा था। यह देख, मोहिनी ने स्वयं, उसको सन्ध्यावली के घर भेजा। रुक्मांगद की अन्य पत्नियों को धर्मांगद ने बहुत-सा सोना और अनेक उपहार देकर सन्तुष्ट किया।

धर्मांगद एक बार सेना के साथ मलयगिरि गया। वहाँ के राजाओं को जीतकर, पाँच मणियाँ लाया। एक सोना देती थी, दूसरा वस्त्र अलँकार देती थी। एक यौवन देती थी। एक भवन देती थी। एक आकाश गमन आदि, देती थी। धर्मांगद ने इन पाँचों मणियों को लाकर अपने पिता को दी और उनसे प्रार्थना

की कि यौवन देनेवाली मणि को, वे मोहिनी को दें।

रुक्मांगद ने अपने लड़के को विवाह करने के लिए कहा। उसने वरुण की कन्या और नाग कन्याओं से विवाह किया।

रुक्मांगद के मोहिनी को लाये हुए आठ वर्ष हो गये थे। उसने मोहिनी से कार्तिक मास व्रत और तरह तरह के दान के लिए कहा और बताया कि सब दानों में, उत्तम दान दीप दान था। कार्तिक मास के प्रति संस्कार के बारे में सुनकर, मोहिनी ने कहा—"ये व्रत मुझसे नहीं होते। अगर आप चाहें तो अपनी बड़ी पत्नी सन्ध्यावली मिलकर, ये व्रत कीजिये।"

रुक्मांगद ने सन्ध्यावली से कहा—"मैंने मोहिनी के मोह में पड़कर, कई वर्षों से कार्तिक मास व्रत नहीं किया है। इस वर्ष करने का विचार है और तुम्हारे साथ करने का विचार है।" सन्ध्यावली भी इसके लिए मान गयी।

कुछ समय बीत गया। एक बार जब रुक्मांगद मोहिनी के साथ टहल रहा था, तो उसे सुनाई दिया—"एकादशी व्रत जो नहीं करेंगे। उनको सज़ा दी जायेगी।"

यह ढ़िंढ़ोरा पीटा जा रहा था। रुक्मांगद ने मोहिनी से एकादशी व्रत करने के लिए कहा।

मोहिनी इस बात पर बिगड़ी। "तुमने मेरी शादी पर मुझे एक वचन दिया था। अब उस वचन को निभाओ। नहीं, तो इससे पहिले जो कुछ पुण्य तुमने किया है, वह सब बिगड़ जायेगा। गर्भिणी, गृहस्थी, बलहीन, शिशु, युद्ध में लड़नेवालों को, प्रति व्रत का करना आवश्यक नहीं है। यह मुझे गौतम महर्षि ने ही बताया है। यदि तुमने उपवास किया, तो मैं नहीं मानूँगी।"

रुक्मांगद ने मोहिनी को कई तरह से मनाकर देखा। उसने कहा, सिवाय व्रत छोड़ने के, वह सब कुछ करने को तैय्यार था। परन्तु वह नहीं मानी। उसने कहा कि इस प्रकार का व्रत कहीं वेदों में नहीं था। रुक्मांगद ने कहा—"कई ऐसी बातें हैं, जो वेदों में नहीं हैं। वेदों में, जो व्रत संस्कार नहीं हैं, वैसे कई, पुराण और इतिहास में हैं।"

"यदि सर्वज्ञ ब्राह्मण आकर, मुझसे विवाद करें, तो वे भी तुम्हें भोजन करने के लिए कहेंगे।" मोहिनी ने कहा।

रुक्मांगद ने गौतम महर्षि आदि को बुलाया। उनसे मोहिनी ने कहा—"अन्न ब्रह्म स्वरूप है। उसके कारण ही प्राण रहते हैं और प्राण के कारण ही कार्य होता है और कार्य के कारण, धर्माचरण होता है। प्रजा रक्षक राजा के लिए उपवास करना नरक का कारण है।" मोहिनी की बात ठीक है, यह गौतम आदि ने कहा। [अभी है]

४०. अरुणालय—सयाम

सयाम की राजधानी बेन्गकांक में, मेन नदी के पश्चिमी तट पर, अत्यन्त सुन्दर वाक अरुण (अरुणालय) है। इसकी ऊँचाई ३०० फीट है। सारा मन्दिर रंग-बिरंगे, चीनी मिट्टी के स्लेटों से बना है, जो धूप में रत्नों की तरह चमकती हैं। यह प्रसिद्ध बौद्ध क्षेत्र है।

Photo by A. L. Syed
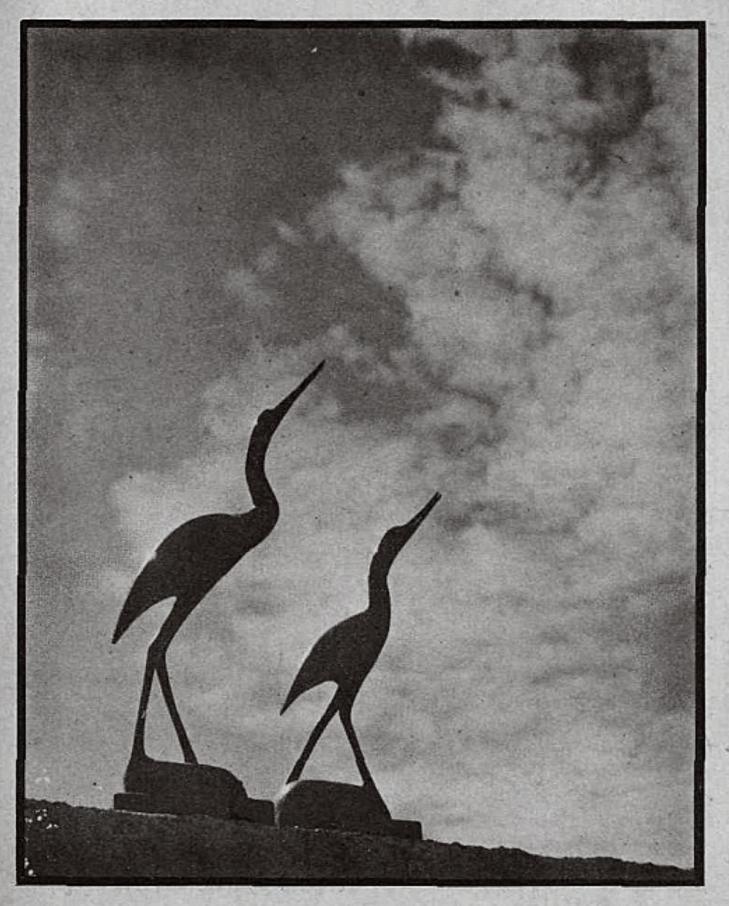
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

सर पूरा उठाये हुए!

प्रेषक:
एच. आर. गोस्वामी - बर्दमान

Photo by A. L. Syed

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

पर नैना झुकाए हुए !!

प्रेषक :
एच. आर. गोस्वामी - बर्दमान

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जून १९६५ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ अप्रैल १९६५ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

अप्रैल – प्रतियोगिता – फल

अप्रैल के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **सर पूरा उठाये हुए !**

दूसरा फ़ोटो : **पर नैना झुकाए हुए !!**

प्रेषक : **एच. आर. गोस्वामी,**

C/o मोतीलाल गोस्वामी, मुंशी बाजार, पो. असनसोल, जिला - बर्दमान

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd.,
and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works